इश्क जो इक तरफा

एकतरफ़ा मोहब्बत की अनकही दास्तान

माही सिंह मायूरी

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Mahi Singh Mayuri 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication,
please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: **978-81-6744-706-7**

Typesetting: Sagar

First Edition: September 2026

मेरी मायूस आँखों में....
तेरे कुछ ख्वाब संदली से....

अनुक्रमणिका

शेयर 1
कैसे..... 2
मुझे हर साँस में मिल जाता है... 3
कैसी गुजरी 4
मज़ा अपना है.. 5
शुक्रिया... 6
अधूरा रह जाएगा 7
मैं समझ जाऊंगी.... 8
शेयर... 9
ज़रूरी तो नहीं... 10
मैं नशे में हूँ.... 11
नींदों की तितलियां... 12
कितने जमाने लगे हैं.. 13
शेयर 14
शेयर 15
शेयर 16
शेयर 17
वो लहू जिगर का है.... 18
क्या लगता है 19
जे तू मुड़के आजावें 20
जुस्तजू तेरी.. 21
मैं हौली-हौली पलका खोलदी आं.................................... 22
सफेद घोड़े पे सवार... 23
तेरा शहर... 24
मेरा सजन मयूरा.. 25

लब सिले हैं 26
सरे राह बिकती 27
की लैना... 28
गल भुलदी नहीं..29
क्या फायदा…..30
शेयर...31
अजब इश्क है तेरा 32
गुरूर क्या है... 33
तेरे जाने के बाद...34
मैं क्या करूँ…...35
तुम्हें क्या पता…...36
मैं इश्क दा कारोबार नहीं कीता…..37
क्या कोई और तेरा इन्तजार करेगा..38
वजह तुम हो..39
इक कतरा..40
शेयर...41
मैं चाहती हूँ..42
क्या तुम मेरा इन्तजार करोगे..44
वजह क्या है..45
मियां...... 46
कोई और बात करते हैं...47
मैं जल के खाक हो जाऊँ 48
दीदार ना करूँ..50
हुआ क्या है...... 51
ऐसा क्यों है 52
कुसूर तुम्हारा है 53
शेयर...55
किस्मत..56
शेयर...57

शेयर 58
शेयर 59
शेयर 60
अच्छा होता.... 61
बोलेंगे नहीं..... 62
शेयर..... 63
शेयर... 64
दिल्लगी... 65
शेयर... 66
शेयर... 67
चुभते बहुत हैं.. 68
तू रूह है मेरी... 69
शेयर... 70
थोड़ा हँस के गले लग जाती हूँ 71
मेरी याद आई कि नहीं.. 72
शेयर 73
नज़र आता है..... 74
बेहतर है... 75
मुझे हैरान कर दो 76
हम तुमसे मिले ना होते..... 77
क्यों है.. 78
शेयर 79
शेयर 80
शेयर 81
बस शौक है ! 82
बचपने का इश्क... 83
तुमसे प्यार बहुत है.... 84
तू इश्क है मेरा... 85
मुझे कह देना 86

अच्छा लगता है.... 87
शरीके हयात..... 88
नज़रें ना चुराया कर 89
हर रंग का ख्वाब 90
याद है.... 91
अच्छी बात नहीं.... 92
एहसास दिल में 93
आखिर क्यों 94
जिद्दा तू आँखे 95
तेरी ओर 96
तुम क्या कहोगे..... 97
अच्छा नहीं लगता 98
मेरे हाथों की हथेलियाँ 99
और क्या करते 100
मुस्कुरा दिया करेंगे 101
शेयर 102
शेयर 103
दूर जाओगे कैसे 104
मुझे तुम याद आए 105
काश 106
शेयर 107
आदत है 108
शेयर 109
शेयर 110
मुस्कुराहट किसकी थी 111
शेयर 112
शेयर 113
शेयर 114
नामुमकिन सा लगता है 115

मेरा इश्क ओहदे वस दा नहीं.. 116
सजना... 117
आज का दिन बड़ा मुबारक 118
शेयर...... 119
क्या इरादा है...... 120
अगर वो रुकने को कहता... 121
वेख लै...... 122
बुरा नहीं लगता.. 123
शेयर..... 124
शेयर..... 125
कौन सा बहाना... 126
शेयर..... 127
छोड़ दिया.... 128
शेयर..... 129
शेयर..... 130
शेयर...... 131
शेयर...... 132
शेयर...... 133
शेयर...... 134
शेयर..... 135
शेयर...... 136
शेयर...... 137
कुछ खुराफाती ख्याल... 138
तुम ना आए.... 139
तलबगार तो नहीं 140
सजन मेरे—गीत.. 141
शेयर...... 142
शेयर...... 143
शेयर 144

शेयर..145
दूर रहो 146
शेयर..147
शेयर..148
शेयर..149
शेयर..150
शेयर..151
तुम्हीं से सीखा है 152
खूबसूरत इनायत, इश्क 153
तुम्हें बताऊँ कैसे..... 154
तुम मुस्कुराना 155
नकली प्यार 156
दिल नहीं करता...157
शेयर..158
शेयर..159
मोहब्बत निभाऊँ कैसे...160
बाकी है...161

शेयर

मेरी साँसों की तपिश बेखौफ सी है....
लबों से छू लो इन्हें, कि कहीं आग ना लगे....
अगर फिर भी जलाना है.... हमें तो दिल से जलाओ....
कि पास की धड़कनो को भी आंच ना लगे...... !

कैसे......

बिखर जाऊँ तेरे चेहरे पर मुस्कान बन के,
मैं खो जाऊँ कहीं तो, मुस्कुराओगे कैसे....
मैं खुशबू तेरे इश्क की, तुझे छू दूँ अगर, महक उठोगे तुम
मेरे एहसास को सभी से छुपाओगे कैसे.....

मैं आ जाऊँ तेरे इतना करीब, तेरा लिबास बन जाऊँ....
किसी और को करीब लाओगे कैसे.....

मैं तो मीठी सी नींद हूँ... तेरे ख्वाबों का ज़रिया....
अगर मुझे नज़रों में रखोगे नहीं, तो ख्वाब सजाओगे कैसे......

तेरा दिल भर जाए, मुझे तोड़ने का मन करे....
टुकड़े महीन मत करना, चुभ जाएंगे हाथों में, उठाओगे कैसे......

आ जाऊंगी, तेरी आँखों में, छोटा सा आँसू बन के....
गैरों से जो नजरें मिलाओगे ऐसे....

मैंने इश्क किया है तुमसे, रूह से रूह का....
मुझसे जुदा तो रह लोगे... दिल से जुदा कर पाओगे कैसे....

मुझे हर साँस में मिल जाता है

मैं हर रात बिछड़ जाती हूँ, उससे यादों की झील के किनारे,
वो हर सुबह सुनहरी धूप सा, मेरे चेहरे पे खिल जाता है ...

मैं तितली सी इठलाती, चिड़िया सी चहचहाती सपने सजाती, सातों रंग के,
वो नीले आसमां के, सफेद बादल सा, मेरी आँखों में घुल जाता है.....

उसे खुद से रखू दूर, मैं कितने दिन महीने,वो मेरी पलको के खारे आँसू सा...
मेरे गुलाबी गालों पर इतराता हैं.....

इश्क गुनाह है कहते हैं सभी, मिलना मुमकिन नहीं.....
अब तो, वो धड़कन है मेरी,, मुझसे वो हर साँस पे मिल जाता है.....

कैसी गुजरी

आज सुबह हम सोकर उठे सिरहाने के पास तुम ना थे
कैसे कहे वो सुबह कैसी गुजरी
मेरी आखें बन्द थी, कि तुम चूमलोगे माथा मेरा सिर सहलाने को,
वहा तुम ना थे.... कैसे कहे वो सुबह कैसी गुजरी
सुबह नम थी, पत्तों पर ओस की बूंदे चेहरे पर मेरे,
सुनहरी धूप के जैसे तुम ना थे....कैसे कहे वो सुबह कैसी गुजरी
चिड़ियों ने चहचहाया, फूलों ने मुस्कुराया,
भंवरे से गुनगुने को वहां तुम ना थे...फिर कैसे कहे वो सुबह कैसी गुजरी
बीत रहा था दिन, घट रही थी सांसे
तेरा चेहरा नजर नहीं आया.....कैसे कहे वो शाम कैसी गुजरी....
सुशक हो गए, लब मेरे, जो थे कभी शबनमी सर्द आहे थी बस.....
तुमने ना पूछा, ना हमने बताया- जिन्दगी कैसी गुजरी...
कैसे कहें, जब तुम ना थे, मेरे साथ कैसी, कैसी गुजरी....

मज़ा अपना है

हिज़्र की सरद आहों पर,
आसुँओ की फुहार का मज़ा अपना है...
जुदाई में तड़पते दिल पर,
 दिलदार के दीदार का मजा अपना हैं।
कितना पागल कर देता है अपने मनपंसद सख्श का ख्याल,
उसी से छुपाकर इश्क करने का मजा अपना हैं.....
महबूब के मिल जाने से, बेवक्त मर जाती हैं कई मुहब्बतें....
मर-मर के जीना, जिंदगी भर, इन्तजार का मजा अपना....
होगीं तेरी भी बहुत सी मजबूरीयां, कि तुम हम से खफ़ा हो जाओ...
सच पूछो तो... बिना कुछ कहे ही...
तकरार का मज़ा अपना हैं.....

शुक्रिया.....

ए इश्क उनके दिल को ,मेरे दिल का रसता बताने का शुक्रिया.....,
उसने हमें चाहा तो सही... ये उनकी इनायत है.....
थोड़ा ही सही, उनका हमें चाहने का शुक्रिया....
यो ही जिए जा रहे थे हम, मुस्कराने का मुखौटा लगा
अब दिल से मुस्कराते है हम, ये हुनर सिखाने का शुक्रिया....
उन सा, हमें ना कोई मिला है , ना ही मिलेगा कभी.....हमें कोई और चाहिए ही नहीं....
जियो तुम ए, इश्क, हमें उनसे मिलाने का शुक्रिया....
दम घुट-घुट जाता है, उनका दीदार ना हो तो.... सांस चल तो रही है " लेकिन "
उन्हीं के नाम से, हमारी जिन्दगी बनाने का शुक्रिया......
वो कभी गले तो लगाए हमें ,हमारी दुआ कबूल हो जाए....
तो हम उनसे भी कह दें.... हमारी जिन्दगी में आकर,फिर ना जाने का शुक्रिया....
शुक्रिया, ए इश्क उनसे, हमको मिलाने का शुक्रिया.....

अधूरा रह जाएगा

रह जाओ यो ही मेरी नजरों के सामने, तेरा क्या ही जायेगा....
मेरा दिल बेचारा, बेचैन बहुत है, थोड़ा सुकुन मिल जाएगा
एक-एक पल कर ये वक्त तो गुजर ही जाएगा, अगर तुम चले गए तो...
इश्क मायुस, और मेरी पथराई आखों में ,तेरा इन्तजार रह जाएगा....
मुझे अफसोस नहीं, तुमे दीवानो सा चाहने का
फिर तेरे इश्क को, तुझसे ही गिला रह जाएगा....
तुम कल पछताओगे फिर, मुझे खोने के बाद,
कुछ पल तुम ही रुक जाओ, ये वक्त कहा रुक पाएगा
मेरे इश्क की खूबसूरती यही है... कि तुम मेरी रुह का करार हो
मैं अधूरी हूँ बिना तेरे, फिर भी खुश हूँ...
खुदाया!! मेरे इश्क भी मेरी तरह, अधूरा ही रह जाएगा...

मैं समझ जाऊंगी....

कभी मैं तेरे दिल में ना रहू तो.... तुम कह देना।
अपनी तकदीर जुड़ ना पाएगी, मैं समझ जाऊंगी....

अगर गुस्ताखी हो जाए, मेरे दिल, इस नादान परिंदे से
तो कह देना, ये उड़ारी तुम भर ना पाओगी, मैं समझ जाऊंगी...

कोई गुनाह हो जाए, मेरी मायूस नजरों से,
तो कह देना, ये हरकत बर्दाश्त की ना जाएगी, मैं समझ जाऊँगी....

तुम कभी निकालो मुझे अपनी जिन्दगी से,
तो कह देना, तुम मेरे साथ दूर तक चल ना पाओगी, मैं समझ जाऊंगी...

रिश्ते को अपने तुम, तकसीम करना.. फनाह नहीं
तुम से दूर तो रह लूँगी लेकिन, तेरे बिन रह ना पाऊंगी, मैं तो मर ही जाऊँगी....
ये तुम !! समझ लेना !!

शेयर...

शायद तुमे, मुझसे मोहब्बत ना थी,
शायद तुमे मेरी तलब ही ना थी
यू ही खेल गए, तुम, मोहब्बत का खेल,
खेल-खेल में...
तुझे तो मेरी तरफ से, खेलने की इजाजत भी ना थी...

ज़रूरी तो नहीं

मैं तुझे चाँहूं, बेपनाह, इबादत करूँ खुदा की तरह,
तुम भी, मुझे चाहो, ये जरूरी तो नहीं...
पिघंल जाँऊ मैं तेरी बाहों में शमा की तरह,
तुम परवाने से, मेरे करीब आकर जल जाओ, जरूरी तो नहीं....
अनजाने में अगर, दर्द दीया है, मैंने तुझे, जिसका मुझे अफसोस बहुत हैं,
तेरे दिल की जमीं पर,अपनी खुशियों का आशियाना, बनाऊँ, जरूरी तो नहीं.....
तुम भूल जाना कि सिसकती जिन्दगी हैं, जहां के किसी कोने में
तुम मजबूरन मेरे आँसू, पोंछने आओ... जरूरी तो नहीं.....

मैं नशे में हूँ.....

मुझे और ना पिलाओ यारो, मैं इश्क के नशे में हूँ....
मुझे यों ना सताओ यारों, मैं नशे में हूँ....
ये जाम, ये महखाने मेरे किस काम के,
अगर हो सके तो, उनकी आँखों से पिलाओ यारो, मैं नशे में.....
याद नहीं मुझको मेरा घर- गलियाँ है कहां,,
यहाँ से उठकर भी मैं जाऊँ कहां... इतना ना भटकाओं यारो, मैं नशे में...
पीलेंगे दर्द का हर घूँट शौक से... वो भी देखों क्यों बैठा है रूठ के...
उसे कहो, जहर के प्याले को, हाथों से पिलाए यारों, मैं नशे में....
ये सर्द रात, गर्म आहें, आँखों में आँसू, दीद बाकी है चाँद की,
उसकी चौखट तक ले जाओ यारों, मैं नशें में हूँ...
खंजर, नशतर, वो मेरे, सीने में उतार दें,
नज़रे ना चुराए, हाथों से मार दें, बस यू नाठुकराए यारों, मैं नशे में....
मौत और मेरी तो यारी बड़ी गहरी हैं,
मेरी तो सुनती नहीं, जिन्दगी ये बहरी है, मुझे मौत से ना डराओ यारो, मैं नशे में हूँ...
मुझे जीना ना सिखाओ यारों मैं नशे में हूँ....

नींदों की तितलियां...

मेरी आँखों से उड़ती हैं, नींदों की तितलियां... तेरे ख्वाबो के पीछे,
वक्त मिले तो, इन्हें मुझ तक पहुँचा जाना
जिन गलियों में पलकें बिछाए, बैठे है हम.... तेरे इन्तजार में,
भूल से ही सही उन गलियों में आ जाना.
तुम वादा नहीं करते हमें यकीन है, लेकिन ....
कुछ अन कही बातों को ही निभा जाना
यही से उठेगा जनाजा मेरी हसरतों का...
आखरी बार का सही, इक फर्ज तो निभा जाना

कितने जमाने लगे हैं

इश्क पहुँचा है मेरा उस मुकाम पर
लोग मुझे तेरे नाम से बुलाने लगे हैं...

कुछ सपने मेरी आँखों से फिसल कर
मेरे दिल को गुदगुदाने लगे हैं।

तुझे देख लूँ जितना भी, मन भरता नहीं
हम तुम्हें इतना चाहने लगे हैं।

उफ्फ ये कैसा सुरूर है तेरे इश्क का...
हम कभी झूमने-कभी गाने लगे हैं।

फलक से उतरे है कुछ फरिश्ते भी...
जो तेरे लिए, मुझको सज़ाने लगे हैं।

कभी प्यार से छूकर मुझे, पूछ मेरी बेकरार रूह से
तुझे पाने में... मुझे कितने ज़माने लगे हैं।

शेयर

मेरा टूटकर चाहना, उसे दिल की मुफलिसी लगी
मेरी पाक मोहब्बत, उसे दिल्लगी लगी....
दिल तड़पा तो बहुत, मगर आँख में आसूँ नहीं।
वो गहरी चोट तो मेरी रूह पर लगी.....

शेयर

कोई बता दो, खुशियो के शहर का रास्ता...
अरसा हो गया है, इन लबों को मुस्कुराए हुए,
दिल करता है, अपने ही गले में बाहें डालकर,
जीअ भरके रो लूँ,
बढ़े दिन हो गए है मुझे, खुद को ही
गले लगाए हुए ॥

शेयर

हसरत नहीं कि तुम मेरा हाथ पकड़कर,
मंजिल तक पहुँचो...
तुम जिन्दगी के काफिले में शामिल हो...
मेरे लिए यहीं काफी हैं।

शेयर

तुम्हें क्यों लगता हैं,
हम तेरे चेहरे पर, मर मिटे...
हम तो रूहो के सौदागर है, साहिब
बस !! तेरी रूह बिकाऊ लगी....

वो लहू जिगर का है....

जब किसी से लगन लग जाए...
फिर कोई, हिसाब नहीं हुआ करते...
अधूरे ही रहते हैं- मुक्कमल ख्वाब नहीं हुआ करते
दिल पे हक्क रहता सिर्फ महबूब का...किसी का कुछ नहीं.....
अपने ही काबू में, अपने जज़्बात नहीं हुआ करते,
निभता है इश्क, जान की बाजियाँ खेलकर...
आँखों से गिरते हैं, बिलखती मोहब्बत के आँसू
वो लहूँ ज़िगर का है, मामूली बरसात नहीं हुआ करते
इस बार ना मिले तो, अगले जन्म का इन्तजार करेंगे....
तुमसे रूह का रिश्ता है... ऐसे इश्क बरबाद नहीं हुआ करते....

क्या लगता है

लोग पूछते है वो तेरा क्या लगता है।
लोग पूछते है वो तेरा क्या लगता हैं।
मेरी आँखों में जो इश्क की चमक है...
उसका नूर सा लगता है....
मेरे चेहरे की खुशी का सुरूर सा लगता है...
दिल करता है उसकी बाहों में,
सिमटकर रो दूँ... और, फिर पूछूँ....
अब तू ही बता, कि तू मेरा क्या लगता हैं......

जे तू मुड़के आजावें (गीत)

आखरी साह तक, करागे तेरा इन्तजार..
जे तू मुड़के आजावे..
पता नहीं क्यों... जाना जरूरी सी तेरा...
रज़-रज़ करांगे, तेरे मुखड़े दा दीदार...
जे तू मुड़के आ जावे....
सुनिया बहुत सी, नहीं मुड़के आऊदें
इक वारी जान वाले,मैं ता हो जावां हैरान...
जे तू मुड़के आ जावे....
मेरा की हक्क है तेरे ते, तू ते चीज पराई ए...
एहना बे-सबरियाँ नैना विच,नज़र वागूँ लवां उत्तार...
जे तू मुड़के आजावे...
लोकां तो लुक- लुक के, हत्था ते लिखदी आं नां तेरा
इनहा कोमल हत्था नूं, मेंहदी नाल कर लां लाल,,
जे तू मुड़ के आजावे...
मेरा इश्क है रब वरगा, मैं तैनूँ, तक-तक होवा निहाल,
जे तू मुड़के आजावे...
जीअ करदा माण लवा, तेरे नाल सुख सारे,
तेरे गल नाल लग-लग के... मैं खुद नूँ कराँ बेहाल
जे तूं मुड़ के आजावे....

जुस्तजू तेरी

जुस्तजू लेकर तेरी, भटकी हूँ इधर-उधर,
बनके हवा.. तेरे आँगन को महकाऊँ, दिल करता है,
रहे मेरा नाम तेरे दिल में इस कदर,
मायूरी से, मैं तेरी चाहत बन जाऊँ, दिल करता हैं,
कुछ कदम साथ चलो जो तुम मेरे,
लड़-खड़ाकर तेरी बाहों में गिर जाऊँ, दिल करता है
सोए हो तुम कभी मीठी सी नींद में....
भीगी जुल्फें तेरे चेहरे पे बिखराऊँ, दिल करता हैं....
कभी छूलो मुझे इस तरह से तुम...
शरमा कर मैं तेरे सीने से लग जाऊँ, दिल करता हैं
तेरे लब हों, मेरे लबों के इतना करीब...
साँस बनके, मैं तेरी साँसों में घुल जाँऊ, दिल करता है....
खुदा जानता है, तुम मेरे जीने की इक वजह...
काश... मैं भी तेरे जीने की वजह बन जाऊँ दिल करता है.....

मैं हौली-हौली पलका खोलदी आं

रातभर, रड़कदा है, तेरा इश्क मेरीयां अख्खा विच सुपना बनके,
ते सुबह तो शाम, मैं तेरियाँ यादा च, साह वरोलदीआँ,
किते टुट ना जाए... सुपना अधविचकार मेरा,
मैं डरदी आँ, ते हौली-हौली पलका खोलदी आँ,
सिंजो के रखिआ है गुलाब दे फुल वांगू, दिल विच तेरे इश्क नू....
संदली नैना विच, सधरा दा अर्क निचोड़दी आँ,
तू वसदा ए मेरे-विच इश्क दी रूह बनके,
किवे रहागी तेरे बिना, हर वक्त ऐ ही सोचदीआँ,
हर साह ते,, रब तो दुआवा विच तैनू मांग के,
तेरी सलामती लई हथ जोड़दी आँ....
आऊण ठण्डीयाँ हवावा तेरे घर वल्लो....
मैं तेरे राहा विच, अथरू डोल दी आँ....
मैं लगता जावा तेरे सीने नाल, तेरे ना दा साह भरके,
किते रूसवा ना हो जान तेरे अपने, बस इही सोचदी आँ...

सफेद घोड़े पे सवार

जब मैं, अपने ख्यालों के सफेद घोड़े पर, सवार हो जाती हूँ....
तो क्या बताऊँ, तेरे ख्यालों के साथ रोमांचित सफर पर निकल जाती हूँ....
विशाल पर्वतो से तेरे कन्धों पर, अपने नन्हे-नन्हें से पंखों को खोलकर,
खूबसूरत तितली सी इठलाती हूँ...
तेरे माथे की लकीरों को चूमकर अपनी नाज़ुक सी उँगलीयों से,
इक लकीर छोटी सी, अपने नाम की बनाती हूँ।
तेरी आँखों की बन्द पलको को छूकर अपनी पलकों से,
तेरे इश्क के ख्वाब चुराती हूँ।
तेरे नखरीली नाक को छूके लबों से, मन ही मन मुस्कुराती हूँ....
तेरे मजबूत सीने पर सिर रख के,
मैं ख्वाबों की नीली झील में गोते लगाती हूँ....
कभी तो, तेरी बाहों में समाकर हवा सी झूलती
कभी नींद की आगोश में खो जाती हूँ....
शबनमी फूल सी खुलती है मेरी पलकें,
जब तेरी सासों की तपिश पा जाती हूँ....
फिर तुमसे, हकीकत में मिलने के लिए,
नए सफर पर निकल जाती हूँ....

तेरा शहर

तेरे शहर की रवायते भी अलायदा हैं...
जान-माल का खतरा है यहाँ....
रहेंगे थोड़ो दिन छुपकर, सलामत रहें तो तुम्हें तब मिलेंगे-देखेंगे
इन गलियों में हज़ूम बेवजह तो नहीं....
कोई मारेगा पत्थर, वजह तब देखेंगे...
हालात नाज़ुक हैं यहाँ, तुमसे, मेरा मिलना मुनासिब नहीं,
कल आएंगे चेहरा ढक कर तुम्हें तब देखेंगे....
ये सब होता ही नहीं, मेरे साथ, अगर तुम ना चाहते तो...
सह लेंगे हर जुल्म, तेरी खातिर,
अपनी मोहब्बत का तमाशा सब देखेंगे....
फनाह हो जाते हैं महबूब, मोहब्बत के नाम पर
हमारी जिम्मेदारियां बहुत है अभी,
थोड़ा रहेंगे सम्भल कर, बाकी अल्लाह सब देखेंगे...
हम तो तेरी इक नजर के मुरीद है, तुझे कभी तो
आएगा रहम ,होगी जब हमारी फिक्र,
अपनी दुआओं का असर हम तब देखेंगे...
अभी तो तन्हा हूँ, अरमानों की सेज पर, तेरे इन्तजार में
जब उठाओगे, घूँघट, तुम्हें तब देखेंगे....

मेरा सजन मयूरा...(गीत)

मेरे इश्क बगीचे दा, ओ मेरा सजन, मायूरा,
इश्क दे नाच दिखावे,
मेरा दिल भरमावे, मैंनू चैन ना आवे...
ओदा तकना, सोहना, ओदा हँसना सोना...
फिर ठुमक-ठमक के, पब चकना सोहना
मै ते मर-मर जावा, इश्क विच डूबदी जावा,
ओ मेरी नींद ओड़ावे, दिल बड़ा घभरावे....
हाय डुब-डुब जावे, ओदी रमज़ ना पावे,
एह पीड़ पराई, दिल विच समाई,
कोई हकीम बुलाओ, मैनू लए बचाए....
उस नू, किवे दिल दी सुनावा, किवे अपना बनावा,
ओ किन्ना सोहना, मोहन मनमोहना...
किवे नज़र उतारा, हाए मैं जिन्दड़ी वारा.....
ओ मेरा सजन मायुरा, मेरा इश्क अधूरा....

लब सिले हैं

अपने रिश्ते की नजाकत का है ख्याल हमें,
लब सिले हैं मैंने, बेबसी की तारों से...
तुम ख्वाबों में खोए कैसे लगते हो....
पूछा मैंने महकी बहारों से....
वो हँस दे तो तुम खिल उठना...
कहा हर फूल की कतारो सें....
तेरी आखों में ना आए, गम का मोती बनके,
इश्क को छुपा लिया मैंने, दिल की दरारों में....
इक तेरा इश्क है, जो धड़कता है मेरे सीने में
इश्क औरों के भी है, जो बिकते है, बाजारों में....

सरे राह बिकती

ना जाने क्यों, उसे मेरी आँखों में मासूम सी मोहब्बत नहीं दिखती...
उसे अच्छे से दिखता है, मेरा कोने में बैठना...
क्यों मेरे हाथों में 'अपने नाम' की रची मेंहदी नहीं दिखती
लाखो शिकवे, शिकायते है उसे मेरे किरदार से...
क्या उसे अपने लिए, मरती हुई उम्मीद नहीं दिखती,
उसे दिख गया, किसी बात पर, मेरा खिलके हँसना,
मेरी आँखों में तड़पती हुई, रूह नहीं दिखती...
उसे कह दो मेरे सब्र का इम्तेहान ना ले...
पल-पल घुटती मेरी जिन्दगी नहीं दिखती,
ये मेरी मोहब्बत है जो, हर हाल में उसकी है....
माना मेरे जज्बात, उसके लिए कीमती नहीं,
लेकिन ये मोहब्बत, सरे राह नहीं बिक्ती....

की लैना...

मेरा इश्क, खुदा दे तोहफ़े वरगा... मैं सदके इसदे..
सारी कायनात दी खुशी, मेरा बाहां विच,
मैं इश्क आजमा के की लैना...
मेरी रूह उसदी ऐ, उसदी रूह मेरी, मैं इस ते ही खुश आँ
उसदे जिसम, ए, लिबास तो की लैना.....
मैं प्यासी रेत दे टीब्बेया (टीले) वांग, आसान नहीं मेरी प्यास बुझे.....
ओ बरसे ना बरसे, मैं उसदी इक बूंद तो की लैना
ओ वस गया मेरीयां अक्खा विच निगाह वागूँ....
दुनियां दी खूबसूरती-बदसूरती तो की लैना....
ओ खुश रहे, अपनी विआनदड़ नाल,,
मैं उसनूँ अपना बना के की लैना....
ओ भोला है, इश्क-विशक ज्यादा समझदा नहीं....
मैं ओहनू होर समझाके की लैना....
रोज सौं जांदी आं, ख्याला च सीने नाल लगके,
उसदी सेज़ (फूलों का बिस्तर) सजा के की लैना.....
ओहनू रब मन बैठी आँ, एह मेरी इबादत हैं.....
मैनू सब्र है ओदे ते, होर रब बना के की लैना

गल भुलदी नहीं

ओह ! मैंनू कैद रखदा ए अक्खा विच.. पलका बन्द करके....
खुद नू कढ़ना वी चाहवा ता, नहीं कढ़ सकदी...
चोग-चुगाऊदा ए, एहसासा दी, अपनीयाँ तलीयां ते...
दिलों कढ़ना वी चाहवा तां, नहीं कढ्ढ सकदी...
नज़र चुरा लवां लक्ख वारी उसतो....
फिर वी उसनू तक्कन तो, खुद नू रोक नहीं सकदी....
जीअ करदा ए, उसदे दिल दे पिज़रे विच, खुद नू सदा लई कैद करलां,
चाह ! के भी एह मैं कर नहीं सकदी...
उसनू बस !! तक्कना ई, मेरी रूह दी खुराक ए...
मैं तड़प जांदी आं, मुँह मोड़ नहीं सकदी....
ओ ‘अमानत’ है किसे होर दी ए गल भुल्ली नहीं....
मैं दूरो-दूर खुश, उसनूँ पाऊन बारे सोच नहीं सकदी !!

क्या फायदा...

लोग तंज कसते हैं, मेरे इक तरफा इश्क पे,
इक तरफा इश्क का क्या फायदा...
जो मिलेगा नहीं, उसे इतना चाहने का क्या फायदा.....
जिसे बात ही ना की हो कभी, उसके इन्तजार का क्या फायदा...
जब कोई दिल की बात समझे ही नहीं, इजहार-ए-मोहब्बत का क्या फायदा.....
हमने इश्क किया है, कोई कारोबार नहीं,जिसमें हिसाब किया जाए...
ऐसे प्यार का क्या फायदा........

शेयर

1) वो चाहता तो दिल के किसी कोने में महफूज रखता मुझको......
मसला यही है, कि उसने ये चाहा ही नहीं.....

---

2) काश तुम पूछ लेते मुझे तुमसे इतनी मोहब्बत क्यो......
क्यो कि ऐसी ही मोहब्बत की तलबगार थी मैं

---

3) वो गले लगके गैरों के, मुबारके देता रहा बार-बार "ईद-मुबारक"
हमें इन्तजार उसकी एक नज़र का रहा.....

अजब इश्क है तेरा

अजब इश्क है तेरा, मैं तेरी आँखों में खुशी
बनके मुस्कुरा नहीं सकती
कितनी बंदिशें हैं, मेरी जुबान के हर लफ़्ज पर,
मेरे तुम, कुछ हो भी, किसी को बता नहीं सकती,
तुमसे जुड़ी है अहसास की डोरी जो...
तुमसे मैं दूर जा नहीं सकती और करीब आ भी नहीं सकती....
अदा कर रही हूँ, तुमसे वफा, कनीज़ का किरदार को निभाकर
बड़े पहरे हैं मेरी नज़रों पर, मैं तुमसे नज़र मिला नहीं सकती....
ये जो बेशकीमती रिश्ता है, तुमसे जहाँपनाह,पर्दे में ही महफूज है,
मैं तेरे गले लग नहीं सकती, तुमे गले लगा नहीं सकती.......

गुरूर क्या है...

इश्क से अपने, वो मुकर गया... किसी मजबूरी से,
इसमें मेरा कुसूर क्या है.....
मेरा इश्क है, मेरे खुदा की इबादत सा...फिर पछतावा ,
इसमें मेरे हजूर क्या है.....
अगर इश्क से मुँह फेर लिया उसने, तो कुछ बुरा भी नहीं....
मेरी तो जात भी है ये इश्क, क्या कहे
इसका गुरूर क्या है....
भा रहा है अगर उसको कोई और चेहरा....
मुझ में अब उसका, रहा भी क्या है....
मैं टूट भी जाऊँ दिल से, बिखरू तिनका-तिनका यकीनन,
वो मुझे समेटेगा जरूर, इश्क किया तो उसने भी था कभी...
वो भी जानता है... प्यार का सुरूर क्या है....

तेरे जाने के बाद

लोग कहते है, रंग फ़ीका सा लगता है, चेहरे का
तेरे चले जाने के बाद....
मैंने कहा, चढ़ेगा, दूसरा रंग भी, इस रंग के उतर जाने
के बाद....
अभी आँखों में पानी है, कि सावन का महीना है....
चमक आएगी आँखों में भादो का महीना बीत जाने के बाद....
अभी वक्त है, दिल के सुधर जाने में,
ये इस पार भी आएगा, वो पार छूट जाने के बाद
वो दिल से निकलता ही नहीं, मैंने कोशिश बहुत की,
माँग लूँगी किराया, दिल के टूट जाने के बाद....
मेरी मुस्कान की फिक्र ना करो, ताज़गी बरकरार है.....
इन लबों को बरसों से छुआ नहीं किसी ने, आखरी बार
मुस्कुराने के बाद.....
ये महफिल, ये शामियाना बस दुनियादारी है... कोई गले
नहीं लगा मेरे.... जनाजा -ए-इश्क उठाने के बाद

मैं क्या करूँ....

तुम रहते हो दूर-दूर मुझसे, अगर मुझे तुम पर प्यार
आए, तो बता मैं क्या करूँ....
मेरी नजरें तुझे देखने को तरस जाए, तो बता मैं क्या करूँ....
जानती हूँ मेरा इश्क इकतरफा है अब तो...
मेरी ही इश्क मुझपे भारी पढ़ जाए तो मैं क्या करूँ
मुझे पता ही नहीं कैसा होगा तेरे गले लग जाने का एहसास...
मेरा ये अरमान मुझसे सम्भल ना पाए तो मैं क्या करूँ....
तेरे दिए, हर दर्द हर खुशी से मोहब्बत है,
तेरी तलब हद पार कर जाए तो मैं क्या करूँ
खुशकिसमती है, कि तुम मेरी नज़रों के सामने हो,
कभी तुम नज़र ना आओ, तो, मेरा दिल घभराए तो मैं क्या करूँ
हाँ ये तेरा इश्क नहीं जो सारी हदें माने, ये मेरा पागलपन है,
तुझे लेकर हद से गुज़र जाए.... कुछ तो कहो तब मैं क्या करूँ.......

तुम्हें क्या पता.....

मेरी पलको में नमीं, बेवजह तो नहीं,
आँखें डुली है भर-भर कर, रात भर,
ये तुम्हें क्या पता, ये तुमे क्या खबर...
तुमने जब मुंह छुपा लिया, मजबूरी का हवाला देकर,
चाँद को देखा रात-भर, बस तुम्हें सोचकर,
ये तुम्हें क्या पता, तुम क्या खबर....
कभी दिखना, कभी छुपना, छुपकर फिर दिखना
ये बेचैनियों का आलम हैं
कैसे सम्भाला है खुद को, क्या बीतती है दिल पर
तुम्हें क्या पता, तुम्हें क्या खबर...
ना जाने कौन सी डोरी, कौन सी गिरहा, जो बंधी भी है दिखती भी नहीं,
तुम कौन हो मेरे, मेरी मंजिल, या मेरे हमसफर
तुम्हें क्या ही पता क्या ही खबर....
मैं अभी सो जाती हूँ, दिल को बाहों में भरकर,
ख्वाबों में आऊँगी मिलने, मैं खुद को सुला कर
कितना मुश्किल है, इश्क निभाना, कभी देखो निभाकर
खैर !!!!! ये तुम्हें क्या पता, तुम्हें क्या ही खबर....

मैं इश्क दा कारोबार नहीं कीता.....

करदे ने लोक उड़ीका मेरीया, उन्ना ते मैं कदे विचार नहीं कीता....
जिन्ना मैं तेरा करदीआ, किसे दा इन्तेजार नहीं कीता...
मेरा रब जानदा ए मेरे सुपनिया दा बेरंगा खालीपन,
तेरे तो वधके मैं किसे नू प्यार नहीं कीता...

रावां तकीयां ने, मैं इश्क दिया, मत्थे उत्ते हत्थ रखके, कई अरसे,
जने-खने नाल मैं सधरा दा कारोबार नहीं कीता...

तू मोह लिया मैंनूँ, मासूम जेहिया अँख्खा नाल तक के,
इस नज़र नाल किसे ने, मेरा दीदार नहीं कीता...

वे भोलेया ! तू ता रूस जाना ए, मेरे नाल गल्ल-गल्ल ते,
अजे तक्क तू, मेरे नाल,, अपने प्यार दा इज़हार नहीं कीता...

तू तां खुशी ए, मेरी, मेरी हर खुशी तो वध के,
वे चन्ना ! तू इश्क मेरा, ते इश्क आप खुदा
तेरे नाल मैं इश्क दे नामते व्यापार नहीं कीता...

क्या कोई और तेरा इन्तजार करेगा

इक-इक पल में ,मैने सदीयां गुजारी हैं तेरे इन्तजार में
क्या कोई और भी, मेरी तरह तेरा इन्तजार करेगा...
हर साँस निशावर है, तेरी हर खुशी पर
क्या कोई और भी तुम पर, मोहब्बत के साथ अपनी खुशियाँ निसार करेगा.....
जिस तरह से मैंने इश्क किया है तुमसे, अपना खुदा मानके,
क्या कोई तेरा इस नज़र से दीदार करेगा....
तुमसे उम्मीद नहीं कोई, ना ही हक्क मांगा अपना,
कौन तुमसे बिना कुछ भी चाहे, तुम्हें मुझसा प्यार करेगा...

वजह तुम हो

मेरी आखों में तेरे नाम पर आँसू जो आए, तो क्या,
मेरे मुस्कुराने की वजह भी तो तुम ही हो....
तुम मेरे हो, हाँ यही सोच कर इतरा जाती हूँ मैं,
और शरमा जाने की वजह भी तुम ही हो....
मैं सोचू सारे जहाँ की खुशी है मेरे छोटे से आँचल में,
मैं खुद तेरी बाहों में सिमटकर चैन से सो जाती हूँ,
इस खूबसूरत अहसास की वजह भी तुम ही हो....
कभी तुम ना दिखो तो दिल बहुत उदास रहता है,
तुझे देखकर, दिल का, अठखेलियां करना,
उडारियां भरने की वजह भी तुम ही हो.....
तुम दिल पे ना लेना, कि तेरी वजह से उदास रहती हूँ मैं,
बस ! मैं कुछ कहती नहीं, मगर,, मेरी हर खुशी की वजह तुम ही हो.....
तुम बात तो करते हो, मुझसे, कोई भी मेरी गलती बताकर,
मैं करती हूँ जान बूझकर वही गलतियाँ, इस की वजह भी तुम ही हो...
मैं सोचती हूँ, मैं अभी भी जिन्दा क्यों हूँ, हजारों मौत मरने के बाद,
खुदाया... इस की वजह भी तुम ही हो...

इक कतरा

क्यो जल गए वो लोग हमारी खुशी से...
शायद ! उनके सीने में सुलगता शमशान जो हैं....

क्या जवाब देते हम उनके बेतुके सवालों का...
हमारा मासूम दिल बेज़ुबान जो है....

होता अगर उनके सीने में दिल तो तड़प उठता....
ये लोग भेड़चाल में चलने वाले इन्सान जो है....

टपका तो होगा उसकी आँखो से भी इक आँसू....
मुझे बागी बनाने का, उसके सिर इल्ज़ाम जो है....

हम तो जिए जा राहे है, उधार की साँसे लेकर....
मेरे मन बसी ! उनकी मोहक मुस्कान जो है.....

अफसोस तो होगा उस खुदा को भी,, मेरे इश्क की
तन्हा अंधेरी रातो का.....
मेरी रौशन रूह के, इक कतरा इश्क का ये
अनजाम जो है......

शेयर

वो दर्द रगों में बह गुजरा,
वो लहूँ जिगर में रह गुजरा....
इक आह! भरी दिलने,, जो अटक गई सीने में....
जब वो हाथ पकड़ किसी और का,,
हमसे अलविदा कह गुजरा.....

मैं चाहती हूँ

मुझे तुमसे मोहब्बत है कितनी, आकर करीब तेरे ये
बताना चाहती हूँ.....

कोई देखे मुझे तो, मेरी आखों में तुम मुस्कुराओ,
मैं इस तरह तुझे पाना चाहती हूँ......

तुम तो बसते हो मुझमें रूह से, मैं तेरी यादों में बस जाना
चाहती हूँ.....

तुम पर यकीन है मुझे, खुद से भी ज्यादा,
मैं तुमे अपनी वफाओं का यकीन दिलाना चाहती हूँ

कभी तुम कहों कुछ अपने मन की.....
मैं तेरी बातो में खो जाना चाहती हूँ.....

मैं शर्मिंदा नही कि मुझे तुमसे मोहब्बत है....
बस मैं तुझे हर रन्ज से बचाना चाहती हूँ.....

लोग बोले तो... बोले मेरे बारे में
मैं तेरी बस तेरी हो जाना चाहती हूँ.....

मेरी किसी बात को दिल पे ना लगाना,
मैं बस ! तेरी खुशी का कोई बहाना चाहती हूँ....

जब थक जाती हूँ, मैं दुनियादारी निभाकर,
तेरी बाहों में सिमटकर सो जाना चाहती हूँ....

मत ही पूछो मेरे ख्वाबों का आलम, ए मेरे अज़ीज
मैं क्या-क्या ख्वाब सजाना चाहती हूँ....

क्या तुम मेरा इन्तजार करोगे

अगर मैं लौटकर ना आऊँ,, क्या तब भी मेरा
इन्तजार करोगे.....
हर "पल" महकता है मेरा तेरे इश्क के एहसास से
तुम अपने ख्वाबों में मुझे शुमार करोगे...
तुमने जताया तो बहुत था, इश्क अपना
लेकिन कभी कुछ कहा ही नही....
क्या कभी,, खुल के इजहार करोगे....
तुम मुझे मिलोगे नहीं, कि किसी और की
अमानत हो....
तुम थोड़े से मेरे रहोगे सदा,, क्या मुझसे
इकरार करोगे....
कहीं खो जाऊँ मैं कभी,तुमे ना दिखूँ....
क्या तब भी मुझसे ऐसे ही प्यार करोगे
अगर लौटकर ना आऊ तो,
क्या तब भी मेरा इन्तजार करोगे

वजह क्या है

तुम जो रहते हो खफा-खफा से
इस बेरुखी की वजह क्या है.....
नाराज हो जाते हो बात-बात पर मुझसे
ऐसा भी मैंने किया क्या है....
जो भी है, तुझे लगता है ठीक नहीं,
जलाकर ख़ाक कर दो जो है हम दोनों के दरमियां
दिल ही दिल में जलने का मज़ा क्या है.....
हाँ इश्क है तुमसे, हमें इनकार नहीं....
अगर ये गुनाह है, तो बता इसकी सज़ा क्या है
तुम अलविदा कह दो हम रुखसती लेले जहान से,
तेरे बिना मेरा यहाँ, वैसे भी रखा क्या है....
कभी चेहरा मेरा, हाथों में लेकर अपने,, कभी पूछा
है प्यार से मुझसे... उदास क्यों हो, मायूरी,
तुमे हुआ क्या है.....
तकलीफ बहुत है, मुझे तेरी नाराज़गी से
अब तुम ही बता दो इसकी दवा क्या है....

मियां......

तैनू रख लवा, दिल दे पिंजरे विच,बनाके इक पंछी.....
तैनू उड़के ना देवा जान मियां....
तैनू जान कह के, अपनी मुट्ठी विच बन्द करलां
बना के नग तैनू मुदरी विच लवां जड़वा मियां...
रखके अक्खां विच, सुरमे वाग तैनू.....
किसे होर नू, देवा ना झाका पाऊण मियां....
अपने साहा विच, वसा लवां, तैनू आप साह बन के
कदे, देवा ना रगा चो जान मियां....
तेरा नां लैके... सरेआम, नचदी फिरां....
तेरा नां लैके हो जावां बदनाम मियां....
मेरी एह जिन्द, मेरे किस 'कम' दी....
जे तैथो ना होई कुरबान मियां.....

कोई और बात करते हैं

कितना प्यार है दिल को तुमसे, कितना हम तुमपे मरते है.....
आज इश्क की कोई बात नहीं, कुछ आपसी रंजिश को कम करते हैं....
चलो जाने भी दो, कुछ और बात करते हैं.....

किस बात पे गुरूर करें हम, कि ये दिल भी मेरा नहीं,
तुझे खोने के डर से, हम किस दर्द से गुज़ारते हैं....
चलो जाने भी दो, कुछ और बात करते हैं.....

यो जो छुपा लेते हो परेशानियां, अपनी मुस्कुराहट के पीछे,
तुम कहो तो, इन्हीं को हल करते हैं,
चलो जाने भी दो, कुछ और बात करते हैं.....

तेरी आँखों में बेपनाह मोहब्बत के बहते दरिया है....
मेरी आँखों के प्यासे परिंदे, इसी भंवर में उतरते हैं.....
चलो जाने भी दो, कुछ और बात करते हैं.....

मैं उतावली नहीं हूँ, तुम्हें पाने को, बस कुछ,
अधूरे ख्वाब जो मेरी धड़कनों में मचलते हैं,
चलो जाने भी दो, कुछ और बात करते हैं.....

वो खुश है, तुम भी खुश हो, तुम दोनों को देखकर
मेरे दिल के एहसास निखरते है...
हम कितने पागल है तुम दोनों की खुशी पे, जान छिड़कते हैं...
चलो जाने भी दो... कोई और बात करते हैं.....

मैं जल के खाक हो जाऊँ

रुख किया करो कभी तो, हमारी गलियों का
तू मशरूफ बहुत है, मुझे इलम तो है लेकिन,
बड़ा गुरूर है मुझे अपनी मोहब्बत पर,
तू इन्हीं खुशफहमियों को झुठलाने को आ....

भर गया होगा तेरा भी मन अब तो मेरी हरकतो सें,
तू चाहे तो शिकायत सुनाने को आ...

तू कह तो सही, मैं वही कर दूँ तेरे लिए,
तू चल, मुझे आजमाने को, आ.....

मेरी कद्र नही तुझे, मुझे यही लगता है,
कभी तो अपना हक मुझपे जताने को आ.....

चुभते है मेरी आँखों में आसूँ, सूख जाने के बाद,
तू आ तो मुझे और रूलाने को आ...

इक झलक देख लूँ तेरी तो, मेरा दिन बन जाए,
तू चाहे तो मुझको हँसाने को आ.....

अच्छा नहीं किसी को इतना तड़पाना,
इश्क है तो फिर, गले लगाने को आ...

तू कह दे, मैं शिकायत भी ना करूँ तुझसे
तू किसी और को मिलने के बहाने से आ.....

तेरी कसम, मैं खाक हो जाऊँ जल के,
किसी का हाथ पकड़कर, मुझे जलाने को आ......

दीदार ना करूँ

सूख जाती है मेरी आँखों की नर्मी, तेरी राह देखकर,
अच्छा होगा, अगर मैं तेरा इन्तजार ना करूँ...

बेकदरी करते हो तुम मेरे जज़्बातों की,
अच्छा होगा, मैं तुम से प्यार ना करूँ....

तुम तो कैसे ही जानोगे, मेरे एहसासों की गहराई को,
मैं अपनी मोहब्बत को तार-तार ना करूँ....

तुमने तो कभी पढ़ा ही नहीं तेरे नाम भेजे, मेरे सिरनावो को....
(सिरनावो= खत)
मैं अपने लफ्जों को बेवजह बेकार ना करूँ.....

तुम चाहो ना चाहो मुझे, तुम तो मेरी चाहत हो.....
मुरझाया सा रहता है, मेरा चेहरा, जब तक मैं
तेरा दीदार ना करूँ.......

हुआ क्या है.......

हो जाती है, गलतियाँ अकसर उल्फतों में लोगों से,
हमसे भी हो गई, तो इसमें बुरा क्या है...

वो रड़कता रहे मेरी आँखों में सुरमें की तरह...
इसके सिवा हमने, उनसे चाहा ही क्या है....

वो आए मेरे दिल में अपनी मर्जी से,
जाए भी तो मसला क्या है....

वो नूर सा चमकता है मेरी उदास आँखों मे,
ये मत पूछो, इन आँखों में दर्द के सिवा और क्या है...

वो मेरा खुदा बन गया, जिस्म से रूह निचोड़ के,
अब इसकी इबादत के सिवा मैंने करना क्या है...

कोई बताओ उसे कि ये जान गिरवी है, तेरी जान की खातिर !!
अब तू ही बता... तेरे इश्क की, और कीमत क्या है...

ऐसा क्यों है ..

तुम कौन हो मेरे.... शायद कोई भी नहीं...
तेरे किसी के करीब जाने से, मुझे फर्क पड़ता क्यों है...

तुम मिले नहीं हों मुझसे, ना कोई बाते हुई साझी....
फिर भी ये दिल, इतनी बेसबरी से तेरा इन्तजार करता क्यों है.....

तुम पर ना कोई हक है मेरा, ना अभी पाया मैंने तुझे,
ना जाने ये बेवकूफ दिल, तुझे खोने से डरता क्यों है....

पल-पल तड़पता है तेरी इक नज़र पाने को,
तेरे आने पर ये चाहत से मुकरता क्यों है....

इस दर्द का कोई इलाज़ नहीं, मेरे बस की नहीं ये तृष्णगी
किसी के इश्क में जीने के लिए, खुद को मरना पड़ता क्यों हैं....

हर सख्श चूर है यहाँ इश्क के नशे में,
फिर मेरा ही इश्क सभी को अखरता क्यों हैं.....

कुछ है, या कुछ नहीं भी, हम दोनों के दरमियाँ,
कुछ नहीं तो, हम दोनों में ये अजीब सा रिश्ता क्यों हैं....

कुसूर तुम्हारा है

शहनाई सी.... गूंजती थी, कभी मेरी हँसी से
वही आज मातम सा माहौल रहता है, ये कुसूर तुम्हारा है

मेरे चेहरे का नूर कहता, सुबह हो गई है...
अब वहीं... शाम ढल जाया करती है, ये कुसूर तुम्हारा है

कभी मौसम बदलते थे मेरे ख्याल के साथ....
गम के बादल छटते नहीं, आँसुओं की बारिश सी रहती है...
ये कुसूर तुम्हारा है

मेरी सूरत देखकर खिलते थे चेहरे कई....
आज वो, मुझसे मुँह मोड़ के निकल जाया करते हैं,
ये कुसूर तुम्हारा है

उठते थे हाथ जो, मुझसे दुआ-सलाम करने को.....
वही हाथ मुझपर उँगली उठाया करते हैं.... ये कुसूर तुम्हारा है

गुलाबी होता था चेहरा, कोई पूछता तेरे बारे में.....
उन्हीं रूखसारों पर अश्क सूख जाता करते हैं, ये कुसूर तुम्हारा है

अब जीने की हसरत नहीं, कि तुम नहीं हो जिन्दगी में,
फिर भी ना जाने क्यों, तेरे नाम पर, जी जाया करते हैं... ये कुसूर तुम्हारा है

जिन्दगी में क्या ही बाकी बचा है, तेरे बगैर
कुछ यादों को समेटकर, हम ज़माने से छुपाया करते हैं,
ये भी कुसूर तुम्हारा हैं

शेयर

तुम्हें क्यों लगता है.... कि हम मोहब्बत से शर्मिंदा हैं
इसीलिए सिर झुकाए बैठे हैं....
दबाकर दर्द सीने में, दिल पे चोट खाए बैठे हैं....
वो दिलदार ही क्या, जो यार की सलामती ना चाहे
वो भी तो बेवफाई का इल्जाम खुद पर लगाए बैठे हैं....

किस्मत

मेरी पलकें झुकती हैं, तुम्हें चोरी-चोरी देखके
शायद तुम्हें, मेरी शरारत सी लगती है....
कल ही तो गए हो.... तुम मुझसे मिलके
लेकिन ये जुदाई... मुझे मुद्दत सी लगती है....।
अपने चेहरे को देखते है... तेरी आखों में कैद तो...
ये कैद मुझे, मेरी अच्छी किस्मत सी लगती है....
तुझे याद करूँ या, प्यार करूँ....
तेरे बारे में, हर बात इबादत सी लगती है...
भुला ना देना कभी, तुम मुझको.... नाराज होकर...
तेरे बिना ये जिन्दगी जिल्लत सी लगती है..... !!

शेयर

मत पूछो दासताने इश्क.....ए मेरे अजीज....
खामखां वो शरमिदा और, हम खामोश हो जाएगे.... !

शेयर

हमे बरबाद करने के घड़ते थे मनसूबे जो !!
सुना है !....
“खुदा की बारगाह में, हमारे लिए दुआएँ माँगते और सिसकते देखे जाते हैं.....”

शेयर

ये बेचैनियाँ, विरानियाँ, इश्क में नाकामियाँ ही मेरी विरासत नहीं,
कुछ खुशफहिमियों की जागीर, मेरे नाम पर... तेरे नाम की भी तो हैं...... !!

शेयर

मेरी हिज़्र-ए मोहब्बत की बात न पूछो
हम खुद ना समझे, उन्हें समझाए कैसे
बह ही जाते आँखों से आँसू.....
उनका नाम आए जो लबों पर.....
इन्हें पलकों की कैद में बिठाए तो बिठाए कैसे...... ।।

अच्छा होता....

बड़ा दर्द है सीने में, काश हम तुमसे दूर रह पाते तो अच्छा होता....
कभी हम तेरे करीब ना आते तो अच्छा होता.....

अब जल तो रहे है हम, अपनी ही लगाई इश्क की आग में,
अंधेरे जिन्दगी में, रोशनी की चाह में, तुमसे दीया ना ले जाते तो अच्छा होता....

अब मुस्कुराए कभी हम तो, दर्द होता है खुशक लबों में,
तुम जो हमें मुस्कुराना ना सिखाते तो अच्छा होता....

छुपा लिया है हमने तुमें लोगों की नज़रो से, पलकों की आगोश में,
काश कि तुम हमें, खुशी का सपना ना दिखाते तो अच्छा होता......

सफर जारी है, लेकिन पता, नहीं जाना कहाँ है....
काश हम, तुमें अपनी मंजिल ना बनाते तो अच्छा होता....

मन करता है, बह जाऊं अपने ही आसुओं में आँखों के काज़ल की तरह.....
तुम हमें डूबने से बचाते तो, पता नहीं कैसै होता.....
बस दिल से तुम,, जरा से मेरे भी हो जाते पता नहीं कैसा होता......

बोलेंगे नहीं......

तेरे आस-पास बिखरे रहे... कितने खत मेरी नज़रो के
जो तुमने कभी टटोले ही नहीं ...
मैंने खामोश लबो से बुलाया बार-बार तुमें....
और तुम! मेरी आवाज पर कभी बोले ही नहीं ...
मेरे बेजुबान एहसासों ने, इश्क कितना जताया तुमे, अपना...
मेरे दिल के लिए.... अपने दिल के दरवाजे तुमने खोले ही नहीं....
हम तड़प गए कि तुम हमें पुकारो नाम से कभी
तुमे सभी ही प्यारे हैं.... बस हमें छोड़ कर.....
समझते हैं हम सब इतने भोले भी नहीं....
दिल करता है सो जाए सदा की नींद....
मिट्टी की चादर ओढ़ कर.....
फिर तुम बुलाना हमें... रो-रो-कर...
हम भी तुमसे बोलेंगे नहीं.....

शेयर.....

वक्त मिले तो हम करते हैं दिलो, की खरीददारी
सुना है, जब से मेरा दिल तोड़ा है.....
उन्हें दिल तोड़ने की आदत सी हो गई...... !!

शेयर...

वो आकर मेरे करीब, यो वापिस चला गया
जैसे मिला ही ना हो,, वो मुझे इस मुलाकात से पहले !!

दिल्लगी

मुझे देखकर मुस्कुराया वो,
मैं नादान इसे मोहब्बत समझ बैठी.....

मेरे लड़खड़ाने पर, सम्भाल लिया उसने....
और मैं उसकी इनायत समझ बैठी....

उसने हाथ पकड़कर मेरा, कहा सम्भल के
मैं इसे अपनी किस्मत समझ बैठी....

वो हसमुख है, मिलता है सभी को हँस के,
खुदा की रहमत समझ बैठी......

लिए फिरती हूँ अब, आँखों में, ख्वाबों के टुकड़े को....
क्यो इक दिल्लगी को, दिल की लगी समझ बैठी.....

शेयर...

आखें सब बयां करती हैं...
मोहब्बत को जुबान की जरूरत नहीं होती...
आशिक हुआ करते हैं, अपने आप में शहनशाह...
किसी के एहसान की जरूरत नहीं होती...
फ़नाह हो जाते आशिक, अपने महबूब से वफा निभाने में....
हर किसी को हर किसी से ऐसी महब्बत नहीं होती.....

शेयर...

तुझे याद करूँ तो आयत हो तुम,
जुंबिश दूँ जो लबों को, मुस्कुराहट हो तुम....
बिना मांगे ही कुबूल हुई.... वो दुआ, खुदा की रहमत हो तुम....
तुमे बुरा ना लगे तो तुमे मैं अपनी जिन्दगी कह दूँ
तुम, तुम नहीं, मेरे हसीन ख्वाबों की हकीकत हो तुम....
तुम मेरे लिए खुदा की इबादत से,
मेरी पाक सी मोहब्बत हो तुम....

चुभते बहुत हैं

खुदा जाने !! ये टुकड़े, मेरे टूटे दिल के है या टूटे सपनो के !!
जो भी है, मुझे चुभते बहुत हैं...........

ये कोई बारिश है, या दरिया की पाक-साफ बूँदे
खुदा कसम मेरे आँसुओ से मिलते बहुत हैं.....

अब कुछ याद नहीं, मेरा अपना कौन और कौन पराया
पर सभी के चेहरे, मुझे प्यारे दिखते बहुत हैं......

तोड़ चुकी हूँ, अब तो प्यार के हर बन्धन को यूँ तो,
फिर भी ना जाने क्यों ! उनसे दिल के रिश्ते बहुत हैं .....

कोई रंजिश नहीं रखी मैंने किसी के लिए दिल में,
मगर इस टूटे दिल को, उनसे शिक्वे बहुत हैं......

तू रूह है मेरी...

धड़कनें खेलती है, छुपनछुपाई, मेरे दिल से.....
तू भवरों सा, मेरे आस-पास ना मण्डराया कर
महकती हूँ मैं दिन-रात, तेरे जिस्म की खुशबू से

मुझे छूकर तू, हवा सा ना सरसराया कर.....
कुछ भी नहीं है मेरे पास तेरी चाहत के सिवा
तू रूह है मेरी, बस मैनू छड़ के ना जाया कर !!

शेयर...

सुनो अगर मैं तुमे दिख जाँऊ-तो
तुम अपना रासता बदल लेना...
मैं नही चाहती, मेरी हँसती आँखों के,
अँधेरे कोने में तुम,
पल-पल मरती हुई, मोहब्बत को देखो....

थोड़ा हँस के गले लग जाती हूँ

मेरी आँखों में लहराते हैं कितने ही दरिया प्यार के
सदा हर लहर में आपकी है।

डूब गई मझधार आज साहिल पर
अजब नज़ारा-ए-जिन्दगी है......

मैं हूँ खिजां, फिज़ा को इश्क है मुझसे
सूखे पत्तों की सेज़ बिछाती हूँ......

जर्रे-जर्रे के लबों पर है दासताने इश्क
हाले दिल फिर भी, सभी से छुपाती हूँ...

बह जाती हूँ मैं हवाओं के संग कहीं भी ......
कभी मुओजो के संग गुनगुनाती हूँ......

लिए हुए हूँ, पलको पर आपके नाजों को
अपने हाथों पर चोग चुगाती हूँ ....

टूट जाए ना सपने, जब लगे मुझको
यो ही खुद से खफ़ा हो जाती हूँ.....

आपकी यादें आती है जब प्यार से मुझे मनाने
थोड़ा हँसके गले लग जाती हूँ.....

मेरी याद आई कि नहीं.....

खत! लिखती हूँ मैं आपको महकी हवाओं पर
हवा, आपको छुए बिना, जाएगी नहीं.....
बादलों के संग भेजती हूँ कुछ बूँदे आखों से....
आपकी राहों में ही बरस जाएँगी कभी.....
बात करती नहीं मैं रात से ज्यादा, वो मेरी पलको
पर, सितारे सजाएगी नहीं.....
क्यों नाराज रहते हूँ, आप मुझसे..... आपकी अपनी हूँ
शायद पराई तो नही......
मेरी धड़कनें, चुपके से पूछ लेती है आपके दिल से
रूसवाई के दौरान, कभी मेरी याद आई के नहीं.....

शेयर

बड़ा इन्तजार था हमें, उनके पैगाम-ए-मोहब्बत का
बडा इन्तजार था हमें, उनके पैगाम-ए-मोहब्बत का,
हमारे इजहार ए-इश्क के बाद,
मगर अफसोस... उन्होंने तो, मुस्कुरा कर अलविदा कह दिया.....

नज़र आता है.....

मुझे इन गुनगुनाती हवाओं में.. बहता हुआ प्यार नज़र आता है......
किसी के लबों पर है, शिकवे, किसी के इजहार नज़र आता है......

कहीं बहते हैं, आँखो में सुनिहरी सपने,
किसी का चेहरा गुलजार नज़र आता है.....

कोई दिल को थामे बैठा है, दिलकश चेहरे का दीदार करके,
किसी की सूनी आँखों में इन्तजार नज़र आता है.....

तुम भी सवार लो खुद को दर्पण में देखकर,
तेरी नजरों में भी इश्क का खुमार नज़र आता.....

ना जाने क्यों, इश्क में डूबा हर शख्स,
सभी को बीमार नज़र आता है......

बेहतर है

मुझे करीब तो रखता है अपने, तुमसे तो तसुव्वुर तेरा बेहतर है.....

तेरी मौजूदगी को भूल जाती हूँ, उसके ख्यालों में खोकर,
शायद मेरे ख्यालों वाला शख्स तुमसे बेहतर है......

तुम छुपते रहो दुनिया से, हमें कोई मसला नहीं
तेरी करीबी की ख्वाहिश से, तेरे हिजर में तड़पना बेहतर है....

क्या पाया मैंने तुमसे इश्क करके, मेरी रुसवाईयों के सिवा,
इस रुसवाईयों से तो, मेरी तन्हाईया बेहतर है.....

मेरी याद आये तो, आ जाना उन्हीं बदनसीब गलियों में
अभी मेरे लिए तेरा शहर छोड़ देना, बेहतर है.....

तुम इजाजत दो तो, मैं मर जाऊँ सुकुन से,
तेरी दी उधार की जिन्दगी से तो बेहतर है.....

तुमने शुरू ही क्यो करना था ये खेल मोहब्बत का,
तुम जीत जाओ अपने रिश्तों की कसौटी पर,
इश्क की कसौटी पर, मेरा हार जाना बेहतर है.....

ऐसा भी नहीं कि मैंने तुमसे प्यार नहीं किया, मेरे लिए आसान
नहीं, अभी के लिए इस किस्से को भूल जाना बेहतर है....

मुझे हैरान कर दो

काश !! कि तुम आ जाओ कहीं से,
पूछ के हाल मेरा मुझे हैरान कर दो...

बड़ी मायूस लगती है , लोगों को आँखे मेरी,
मिलाकर नजरों से नजरें, सूनी आँखों में इश्क के रंग भर दो.....

धीमे-धीमे चलती है ये साँसे मेरी- तेरे बगैर,
रखकर मेरी गली में कदम, मुझे परेशान कर दो....

ऐसा भी नही कि मैं जी नहीं रही तेरे बगैर,
चूमकर माथा मेरा, बस !! मेरा मरना आसान कर दो....

काश कि तुम आजाओ कहीं से,
पूछ कर हाल मेरा, मुझे हैरान कर दो......

हम तुमसे मिले ना होते.....

काश हम तुमसे मिले ना होते,
काश तुम हमसे मिले ना होते.....

रूखसती ले लेते, हम मुस्कुरा कर, बज्म-ए जहां से
मोहब्बत से हमें कोई गिले ना होते......

क्या आलम है दिल-ए शहर का खुदा खैर करे,
ऐसी उदासियों भरे, मन्जर ना होते.......

जैसे दिखते है, हम, किरदार से टूटे बिखरे से,
काश ! दिल के अंदर ना होते......
अगर......

तुम हमसे मिले ना होते, हम तुमसे मिले ना होते,
शुरू ये मोहब्बत के सिलसिले ना होते.....

क्यों है

तेरा चेहरा, मेरी ग़ज़ल के उस शख्स से मिलता क्यों है।
मुझे मसरूफ रखता है जो अपने तसव्वुर से
तू हुबहू, उसके जैसा दिखता क्यों है.....

क्या लेना -देना है तेरा, मेरे उस जा-नशीन
से, तुम दोनों का मुझसे ये पर्दा क्यों है....
मैं सोचूँ उसको तो रू-ब-रू तुम आ जाते हो
खुदा जाने मेरे साथ ऐसा होता क्यों है.....

कभी दिल पर हाथ रख दो मेरे.... कि ये बेचैन बहुत है.....
ना जाने, ये तेरे लिए इतना तड़पता क्यों है

आखों में देखकर मेरी, बयां कर भी दो दर्द अपना,
तू इतना कुछ दिल में रखता क्यों है....

कभी ख्याल आए मेरा तो बता देना...
तेरे-मेरे दरमियां, ये मोह का रिश्ता क्यों है.....

शेयर

तेरे हिज़्र से भी, हमें कमाल का इश्क है,
तभी तो हम,तड़पते भी है,
तेरे लिए तरसते भी है.....
कभी बिना सबब के आँसू बरसते भी है.....

शेयर

मैं माँगती रही अपने खुदा से,
उसके लिए, चैन की नींद,
दिल में सकून, चेहरे पे नूर,
जिस शख्स से मेरा कभी कोई ताल्लुक ही ना था

शेयर

कितने सवाल रहते हैं हर वक्त मेरी,
हैरत भरी नजरों में.....
उस शख्स को मेरा दिल तोड़ने के लिए.....
मेरे दिल में बसना जरूरी क्यों था

बस शौक है !

तेरी आँखों में देख पाना मुमकिन नहीं,
फिर भी तुमसे नज़रे मिलाने का शौक है.....

वैसे तो मैं अपने वादों से मुकरती नहीं,
तेरे लिए तो मुकर जाने का शौक है....

कभी-कभी तुझे छूते हुए,
तेरे करीब से गुजर जानेका शौक है.....

और हाँ, सबसे छुपाकर तुमसे इश्क करना,
तुझे याद कर के अकेले में मुस्कुराने का शौक है....

कभी तुझे अपने तसव्वुर में रखना,
लोगों की नज़रों से बचकर दिल में छुपाने का शौक है.....

हम जानते हैं, तुम किसी और की मलकियत हो,
फिर भी तुझे शिद्दत से चाहने का शौक है...
होगी तो नहीं मेरी ये आरज़ू पूरी,
फिर भी, ख्वाबों में, तेरी बाहों में आकर तुझमें समा जाने का शौक है.....

बचपने का इश्क

कैसे कहें तेरे बचपने के इश्क का दर्द मासूम कितना है,
हमने इसे, दोनो बाहों की, गरमाइश में पाल रखा है......

ये दिल टूट तो गया है..... गलती से मुझसे गिरके,
फिर भी इसके टुकड़ी को, बड़ी मुश्किल से सम्भाल रखा है....

तकलीफ ये नहीं कि मुझे, तकलीफ बहुत है,
बस !! ये मुझे चुभे ही क्यों ?.... खुद के लिए यही सवाल रखा है.....

या खुदाया !! कितना नादान है, इश्क तेरा,जो मेरे इश्क को कभी समझा ही नहीं,
मैंने मेरे जहन में इन्हीं सवालों का बवाल रखा है.....

इन पराए लोगों से क्या रंजिश रखें हम,मेरे तुम ही तो थे अपने,
इसलिए सिर्फ तुमसे मलाल रखा है....

तुमसे प्यार बहुत है....

लगा लो गले हमे, गलती से अपना समझकर
इस पल का हमें इन्तजार बहुत है....

तुम तो कभी कुछ कहते नहीं, ना जताते हो हक अपना,
फिर भी तुम पर एतबार बहुत है....

तेरी नजरें हैं, जो हमें, अपनेपन का एहसास कराती है,
तेरी नज़रों को पढ़ने में हम, होशियार बहुत हैं....

पता नहीं तुम कब कहोगे, हम ही कह देते हैं तुमसे...
ए सनम, हमें तुमसे प्यार बहुत है...

तेरे लिए तो शायद हम कुछ नहीं होंगे कभी....
बस हमें तुम अपने करीब रखते हो...
तेरा हम पर यही उपकार बहुत है....

तू इश्क है मेरा....

जब तुम उड़ती हुई नज़रों से,मेरे माथे की बिंदिया को चूमते हो...
तो दिल करता है, मैं अपनी आँखे बन्द कर लूँ

तुम जब गुजरते हो करीब से, तो लगता है वक्त यहीं रुक जाए.... !
दिल करता है, तेरी बाहों में आ जाऊँ, या तुम्हें बाहों में भर लूँ....

तेरे अहसास को कैसे, बयां करें हम,
साँस रोक कर अपनी, बस तुझे महसूस कर लूँ....

इश्क कहता है, तुम पर एतबार कर लूँ,
दिल तो कहता है, ना, ना, किस बात पे कर लूँ.....

ये हँसाएगा, यकीन दिलाएगा, फिर मुकर जाएगा,
कैसे दर्द में तड़प लूँ... फिर कैसे बार-बार मर लूँ...
तू तो इश्क है, मेरा, मैं बस तुझे महसूस कर लूँ !!

मुझे कह देना

अगर तेरा दिल अकेले में, कुछ बुदबुदाए तो मुझे कह देना.....

अगर ये तुमसे ना सम्भल पाए, तो मुझे कह देना...

जब तुम्हें ये अपनी बातों में फँसाए तो मुझे कह देना....

दिन में ही खुली आँखों में, तुमे सपने दिखाए तो मुझे कह देना....

अगर मुझे देखने की रट लगाए तो मुझे कह देना.....

अब ये सभी के सामने, मुझे देखकर,, मुस्कुराए तो नज़रे चुरा लेना,

ये बे-हया हम दोनों को बर्बादी के रास्ते ले जायेगा......

अच्छा लगता है....

तुमको पता है क्या.... मुझे क्या अच्छा लगता है.....
तुम जो मसरूफ़ रहते हो जमाने भर की जिम्मेदारियों में
अक्सर तेरा मसरूफ हो जाना मुझे अच्छा लगता है

मेहनत करके जो आती है तेरे माथे पर पसीने की बूँदे
तेरा वो अनजाने में हटाना अच्छा लगता है....

तुम तो गुमशुदा से रहते हो मेरी नज़रों से,,
तेरा अचानक लौट आना, मुझे अच्छा लगता है...

कभी-कभी तुम्हें लगता है, मैंने देखा नहीं तुम्हें....
इसी बात तेरा बेचैन हो जाना भी मुझे अच्छा लगता है

ऐसा भी नहीं कि हम कुछ चाहते है तुम्हीं से,
कभी इत्तेफ़ाक से, तेरे हाथों का, मेरे हाथो को छू जाना अच्छा लगता !!

क्यों सारा दिन घूमते हो सूजा सा मुँह लेके....
इसी बीच मुझे देखकर तेरी नजरों का मुस्कुराना मुझे अच्छा लगता है....

परेशान तो होते ही होगे तुम भी, मुझसे दूर होकर,
तेरा जानबूझ कर हमसे दूरियां बनाना, मुझे अच्छा नहीं लगता।

शरीके हयात......

हम तड़पते हैं.... तेरे बिन चाँद रातों को...
कि काश ! तुम हमारे साथ होते !!

हम दिल पे हाथ रखते अपने, तो तुम मिलते
काश; कि तुम इतने पास होते....

तुम्हें याद करूँ तो ही जियूँ, भूलूँ तो मर जाऊँ....
काश तेरे भी ऐसे एहसास होते....

मैं होती तेरी शबनम सी नम जमीं,
मुझ पर झुके हुए, तुम मेरे आकाश होते....

तुझे मिलती मैं, छत पर आकर रातों को....
जो अपने मकान आस-पास होते....

ना हक दिया , ना रिश्ते को ही नाम कोई
काश... हम तेरे शरीके हयात होते....

नज़रें ना चुराया कर

धड़कनें खेलती हैं, छुपनछुपाई मेरे दिल से...
दिखाकर मुखड़ा मेरी नज़रों को, नजरे ना चुराया कर,

जब से छू लिया है, तुमने महकता है, बदन तेरी खुशबू से...
तू हवा सा ना सरसराया कर,
तेरा मन हो, मुझसे बात करने का, तो कर खुल के
तू बेवजह ना घबराया कर,

कुछ नहीं है मेरे पास तेरी चाहत के सिवा
तू रूह है मेरी, मैंनू छड़ के ना जाया कर

हर रंग का ख्वाब

तुमसे बात करने में घबराता है दिल मेरा,
तुझे आखों में नींदो सा बसा रखा है....

तेरी तरफ आने वाली काली गम की घटाओं को...
हमने अपनी पलकों पर, काज़ल सा सजा रखा है

भूल से भी ना बरसे तेरी आँखों से दुःख का आँसू
हमने सावन को ही अपनी आँखों में बिठा रखा हैं.....

खिंजा भटक-कर ना चली आए तेरे घऱ की और
तेरी राहों में फिज़ा का पहरा बिठा रखा है....

तुम खुश रहो... खुशियों का स्वागत करो बाहे फैलाकर.....
हम ने तेरे लिए, हर रंग का ख्वाब सजा रखा है.....

याद है....

तू मुकर गया इश्क से तो क्या, मेरी आँखों को तेरी
मोहक सी सूरत के नज़ारे याद हैं....

तुमने कुछ नहीं कहा, हमें शिकायत नहीं...
आँखों-आँखों में, नजरों ने नज़रों को किए, इशारे याद हैं...

तुमसे कोई रंजिश नहीं... शिक्वा नहीं, तेरी फितरत ही यहीं थी
लेकिन, आँखों ने आँखों से किये वादे सारे याद हैं.....

पूछले, बहला, फुसलाकर तेरे दिले से, वो झूठ नहीं बोलेगा....
उसे मेरी आँखों के काजल के किनारे याद हैं

जब सजेगी कचैहरी, इश्क की मेरे नाम पर, इल्ज़ाम मुझ पर ही देना,
कहीं रूसवा ना हो जाएँ, मुझे तेरे अपने प्यारे याद हैं

हम तो भूल भी गए कि हमें तुमने तोड़ा
बस कुछ दिल की गहरी, दरारें याद हैं...

तुम मुझे तकलीफ ना देना, बार-बार रू-ब-रू आकर !!
तू मुजरिम है, मेरी पाक मोहब्बत का,
मुझे सारे तेरे ज़ख्म,, करारे याद हैं.....

अच्छी बात नहीं....

इस कदर, बेरूखी दिखाना, अच्छी बात नहीं....
अपनों को यूँ ही.... अकेला छोड़ जाना, अच्छी बात नहीं....

हम ओझल नहीं होते, कभी तेरी आँखों से तुम्हें बताए बगैर
बिना कुछ कहे, कही भी चले जाना, अच्छी बात नहीं....

हम कहीं भी रहें, तुम्हें अकेलेपन का अहसास नहीं कराते....
बेचैन दिल को, तन्हाईयों की जालिम आग में झोंक जाना, अच्छी बात नहीं....

हमने अभी देखा ही कहाँ था, तुम्हें जी भरके....
नज़रों को तरसते छोड़ जाना अच्छी बात नहीं....

तेरे इश्क पे तो हमें यकीन है कोई शक नहीं
मेरे सब्र को हद से ज्यादा आज़माना, अच्छी बात नहीं....

हमने धड़कनें बिछाई हैं तेरी राह में, बस जितना हो सके, जल्दी लौट आना,
किसी को इन्तजार हो जब किसी का, इतना इन्तजार कराना अच्छी बात नहीं....

तुम मुस्कुराओ, खुश रहो, ये बात मेरी हर दुआ में शामिल है.....
किसी अपनों को इस कद्र भूल जाना अच्छी बात नहीं......

एहसास दिल में

मेरी कलम से, बह रहे हैं, अहसास दिल के,
तुम कहो तो, इक नज़्म तेरे नाम लिख दूँ....

अपनी आँखों में सुरमे सा रख के तुझ को,
मुस्कुराती नजरों से, हसीन ख्वाब लिख दूँ.....

दिल तो करता है तुझे रख लूँ, सुर्ख लबों पे अपने,
इसी अहसास को मैं दिलकश मुस्कान लिख दूँ....

तुम जो मुझे छू लो प्यार से, तो तेरे दिल पर मेरा हक हो जाए,
तुझे बड़े दिलवाला, खुद को इश्क में बदनाम लिख दूँ....

कभी दे दो इजाजत गले लगाने की,
दर्द-ए-हिज्र को अपने, मैं रूह का आराम लिख दूँ...

चलो मैं लिखती हूँ खुद को तेरे दिल की मल्लिका,
और तुझको मैं जान जहान लिख दूँ.....

मेरी कलम से बह रहे हैं अहसास दिल के,
तुम कहो तो इक नज़्म तेरे नाम लिख दूँ....

आखिर क्यों

बिठाकर पलकों के झूले में, मुझे फलक तक पहुँचाया क्यों ?
मुझे मेरी ही नजरों में गिराना था... तो इतना ऊँचा उठाया क्यों....
पथराई आँखे ढूंढती हैं, तुझे हर चेहरे में,
मुझे टूटकर चाहना सिखाया क्यों....

हाथ पकड़कर ले गए भरी महफिल से,
तन्हाई में हाथ छुड़ाया क्यों.....

जब था तेरी जिन्दगी में, और कोई,
फिर मुझे दीवाना बनाया क्यों....

आज सोचती हूँ कि नूर गया कहा, मेरे चेहरे का,
तेरे पीछे मैंने ये हाल अपना बनाया क्यों.....

वक्त बदला कि बदले अपने भी,
जिन्दगी का हर रिश्ता पराया क्यों....

देने थे अंधेरे हक-ए मेहर में मुझे
उम्मीद का चिराग, रौशनाया क्यों....

कभी मिलो तो करूँ कुछ सवाल तुमसे,
तुमने मुझसे अपना चेहरा छुपाया क्यों....

जिद्दा तू आँखे

जी करद ए तेरे दर्द नूं, असी यार बना लईए.....
करके शिकायताँ, तेरीयां....
सारे उलाम्भे लाह लईए,
जे देवें इजाजत, तू सानू
तैनू गल नाल, लालईए....
असी भटके कल्लम-कल्ले, हिज़र दिया जंगलां विच,
जे तू मन जावे तां, तैनू गल नाल ला लाईए.....
घुट्ट पीता दर्दा दा, हून कोई दर्द नहीं !
जे खंजर तूं मारे, असी सीना बिछा लाईए..

जे, तू कहदें, इश्क नहीं.....
हसी गल्ल हासे पा लाईए....
लोकी लभदे ने, रब नूं,
तैनू रब बना लईए......
कोई जोर-जबरीयां नहीं,
जिद्दा तू आखे.....
गल ओवे मुका लाईए......

तेरी ओर....

ये जो हसरतें दिल में दबी सी हैं,
पता नहीं, तुमको दिखाए कैसे....

ये दर्द है... या सुकून सा इश्क में...
खुद समझे ही क्या, तुम्हें समझाएँ कैसे....

बड़े फासले है, तेरे-मेरे जहां मैं....
सोचते हैं हम, तेरे करीब, आएँ-तो आएँ कैसे....

कहा ही नहीं जाता, कि हमें तुमसे मोहब्बत है,
तुम से मुँह मोड़ के, जाएँ भी तो जाएँ कैसे....

बदल लेते हैं हम, राह अपनी तुमसे टकरा जाने के बाद
अपनी पलकों के आँसू को तुमसे, छुपाएँ तो छुपाएँ कैसे....

कभी तुम ही चल दो, कुछ कदम मेरी ओर,
हम तो मजबूर हैं, इक कदम तेरी और, बढ़ाए तो बढ़ाए कैसे....

तुम क्या कहोगे......

मैं तुमसे कहूँ कि, तुम मेरे कुछ तो हो....
तो तुम क्या कहोगे....

मेरी आँखों को हमेशा तलाश तुम्हारी है...
क्या तुम मुझ पे यकीन करोगे....

मैं जानती हूँ मेरी राहे अलग है, तेरी राहों से....
किसी राह के किसी मोड़ पर, कभी मिला करोगे ।।

मैं रहती हूँ तुमसे, फासले बनाकर, मुझे फिक्र तुम्हारी है.....
ख्वाबों में ही सही कुछ पल, मेरे लिए जिया करोगे ।।

तेरा इश्क ज़हरीला बहुत है, ले लेगा, इक दिन जान मेरी
मै ना रहूँ तो... क्या कभी मुझे याद किया करोगे ।।

अच्छा नहीं लगता

तुझे ना चाहना, मेरे बस का नहीं,
किसी की अमानत में ख्यानत करना भी,
मुझे अच्छा नहीं लगता,

तुम मुस्कुराते हो तो, मुस्कुराता है मेरा रोम-रोम
कभी-कभी तेरा परेशान हो जाना, मुझे अच्छा नहीं लगता

तुम आस-पास रहते हो, तो टिमटिमाते है, मेरी आँखों में हजारों जुगनूँ॥
तुम्हें ना देख पाना मुझे अच्छा नहीं लगता !!

तुमसे नजरें मिल जाए जो, इत्तेफाक से.....
तो झूम उठती हूँ मैं, तेरा नज़रें चुराकर चले जाना अच्छा नहीं लगता

ये कितना खूबसूरत अहसास है कि, मुझे तुमसे मोहब्बत है
तेरा हमेशा कि तरह, इक तरफा मोहब्बत का अहसास कराना अच्छा नहीं लगता....

मैं तो दिल से कुरबान हूँ, तेरी हर खुशी पर....
तुझे याद करके, रूह तक तड़प जाना मेरा, क्या तुझे अच्छा लगता है..

मेरे हाथों की हथेलियाँ

कितनी सूनी सी लगती हैं मेरे हाथों की हथेलियाँ,
तुम कहो तो... मेंहदी में छुपाकर तेरा नाम लिख दूँ....

तेरे लबों से तो ज्यादा, बोलती तेरी आँखें,
तेरी इस मोहक अदा को, मैं इश्क का इकरार लिख दूँ.....

इन्तेज़ार बहुत है, मेरे हाथों का तेरे हाथों से हो कोई राबता,
कुछ कदम साथ चलो तो, समुंद्र किनारे वाली शाम लिख दूँ....

तुम कभी कहते ही नही अहसास, अपने दिल के,
चलो तुमें इश्क की किताब में, इश्क से अनजान लिख दूँ ....

तुम लिख दो मेरे नाम का इक, अक्षर कहीं पर,
और बदले में... मैं तेरे नाम पर सारा जहान लिख दूं....

और क्या करते

कितने सवाल करती है, ये खूबसूरत आँखें तेरी,
हम तुमसे, नज़रे ना चुराते तो और क्या करते...

बड़ा दिलकश है तेरा चेहरा ,जो हमें कभी भूलता नहीं,
हम तुमसे दिल ना लगाते, तो और क्या करते ....

हर वक्त, बेचैन कर देता है, हमें ख्याल तेरा,
हम तड़पकर तेरे करीब ना आते, तो और क्या करते....

शरमा जाते हैं हम, जब नज़र भर के, देख लेते हो हमें,
तुमसे कुछ कह नहीं पाते, तन्हाई में ना घबराते तो और क्या करते...

खुश तो हैं हम, कि तुम मेरी जिंदगी में शामिल हो,
लोग जले तो जल जाए, मेरी बला से,तेरे आने पर हम जश्न ना मनाते, तो और क्या करते....

अफसोस तो ये भी है, पता नहीं क्या है तेरे दिल में,
इसी बात पर हम, मायूस सा मुँह ना बनाते तो और क्या करते.....

मुस्कुरा दिया करेंगे

वादा रहा, तेरे सिवा, ना किसी का तसव्वुर करेंगे
दुखाओगे कभी दिल मेरा, तो भी ना कोई गिला करेंगे
तुम बनाओगे झूठी-मूठी बहाने जो.....
आँखे बन्द करके भरोसा करेंगे.....

तुम जाओगे जब, हमें अकेला छोड़कर
हर साँस के साथ, तुझे याद किया करेंगे ......

तेरी छोटी-छोटी शरारतों को याद करके,
तन्हाईयों में खूब हँसा करेंगे....

तोड़ दोगे जो कभी दिल मेरा,
तब भी खुदा से, तेरे लिए दुआ करेंगे ...

कोई पूछेगा, कभी मुझसे, हमारे इश्क की कहानियाँ ।।
किसी से कुछ ना कहेंगे, आँखों में छुपाकर आँसू तेरे नाम के
'बस मुस्कुरा दिया करेंगे'....

शेयर......

हम तुमसे इतने भी खफा न थे... ए जिन्दगी,
कि तुम रू-ब-रू आते, और हम तुमसे मुँह मोड़ लेते !!
हाँ, वह मसला अलग है, कि तुमने
हमें मनाने की ज़हमत ना की....
और हमने आज तक तुम्हें भुलाने की कोशिश ना की !

शेयर......

मुमकिन था मेरी मोहब्बत का बेवक्त मर जाना
इश्क के वीरान, सूखे बीहड़ में, कोई ना-उम्मीदी अकेलापन
लेकर कब तक जिन्दा रहता....

दूर जाओगे कैसे

इश्क में मुझसे थोड़े रखना फासले,
नजदीकियाँ हुई तो, दूर जाओगे कैसे....

यकीनन दिल में छुपा लोगे इश्क मेरा,
अपने चेहरे से, मेरे इश्क का, चेहरा हटाओगे कैसे...

मुझे तो आता है, इश्क की बातों में लगाकर अपना दिल बहलाना,
तुम मेरे हो गए तो, किसी और के, हो पाओगे कैसे.....

सदा मुस्कुराऊंगी, तेरे लबों पर खुशी बनके,
मैं तुमसे जुदा हुई तो, तुम मुस्कुराओगे कैसे.....

अभी तो, मैं खिंची आती हूँ, तेरे इश्क की कशिश से,
अगर मैंने तुझे तड़पके पुकारा तो, खुद को रोक पाओगे कैसे.....

इश्क मुझसे रखना तुम सिर्फ नजरों का, साहिब'''
मेरी रूह में उतर जाओगे तो, उभर पाओगे कैसे

मुझे तुम याद आए

तितली को देखा, जब फूलों पर मंडराते हुए ॥
मुझे तुम याद आए......

पंछियों को देखा, चोंच लड़ाते हुए...
मुझे तुम याद आए.....

दरख्तों के पत्तो को देखा, हवा संग लहराते हुए
मुझे तुम याद आए.....

घंघोर घटाओं को देखा, आसमान की बाहों में, इठलाते हुए.....
मुझे तुम याद आए......

आह!! भरी दिल ने, तेरे लिए तड़प उठा....
और- अब पूछता है तुमसे....
क्या कभी, तन्हाईयों में, तुम्हें हम याद आएँ......

काश

काश...... तुम किसी की अमानत ना होते
तो हम भी, बेइमान ना होते.....
ना होते किसी की सेज का फूल तुम....
हम बेज़ुबान ना होते.....
तुम मेरे सपनों के सरताज ना होते.....
हम इश्क के नाम पर कुरबान ना होते....
ना हमारा इश्क इतना मासूम होता
और हम इतने नादान ना होते.....

शेयर......

मैं अनजान रही तूफान के आने से....
नाम लिखके उसका, इक पन्ने पर,
और दिल की किताब को खुला छोड़ दिया....

आदत है.....

कैसे सम्भाले हम अपनी बेचैनियों को,
कि हमें अब, तुमको चाहने की आदत है ...

तन्हाईयों में तुझे याद करके,
बेखुदी में मुस्कुराने की आदत हैं....

झूठी-मूठी, तुमसे बात करके,
अकेले में बुदबुदाने की आदत हैं....

आ जाते हो कभी मेरे ख्वाबों में तो,
सच कहूँ तो, शरमा जाने की आदत हैं....

करते हो तुम किसी से बाते हँस-हँस के,
हमें तो दिल ही दिल में जल जाने की आदत है....

बातें बहुत हैं, जो मुझे करनी है तुमसे,
और तुम्हीं से इश्क छुपाने की आदत हैं.....

तुम चाहो तो कह सकते हैं, मुझसे,
चलो... तुमको तो बाते बनाने की आदत है ....

शेयर....

हम रूठ जाएँ, तो, उनको मनाना नहीं आता
और हमें अपना दर्द दिखाना नहीं आता,
यों ही रहेगी रंजिशे, हम दोनों के दरमियाँ
उनको इश्क जताना नहीं आता....
हमको इश्क छुपाना नहीं आता.....

शेयर....

इश्क नाम है खुदा का, शुरू ये रूह से होता है....
इश्क ना मरता है कभी, ना कभी पैदा होता है......
पनपकर धड़कनों से, इश्क ने दिल धड़काया होगा.....
इश्क हुआ होगा, उसको भी गर किसी ने इश्क बनाया होगा.....

मुस्कुराहट किसकी थी

मेरे ही हाथों से गिराकर, तोड़ दिया दिल मेरा,
पता नहीं ये शरारत किसी थी....

कोई तो है, जो चाहता है, मुझे रूह से मारकर, दर्द में जिन्दा रखना,
खुदा जाने ये साजिश किसकी थी.....

वो चेहरा, हसीन ख्वाब सा, बसा हुआ है, मेरी आँखों में
जो अब पहचानता नहीं मुझे, उसी से पूछो, तुम नहीं तो फिर मैं मोहब्बत किसकी थी.....

हम तो खुशियों के सौदागर है, मुस्कुरा के कह देंगे.... अलविदा....
तुम कैसे कहोगे, जो तेरे चेहरे पे ठहर गई वो मुस्कुराहट किसकी थी....

शेयर....

कभी मिल मुझे, जिन्दगी, की अनजान राहों में,
गलती से लगार गले मुझे......
चल ईद मुबारक ही कह दे.....

शेयर....

हमने तो इकट्ठा कर लिए ख्वाबों के तिनके,
इक आशियाने की खातिर,
और उनको तो मौसमी वक्त बिताने तक की ख्वाहिश थी।
हम तड़प गए, लबों पर मुस्कुराहट थी....
ना आने दिए आँखों में आँसू
ये मेरे इश्क की अजमाइश थी......

शेयर....

ये दुआ है मेरी रब से, उसका हर लम्हा, खुशनुमा गुजरे,
मैं रख लूँ बलाएँ उसकी, तोहफा समझकर
ठण्डी हवा भी गुजरे, उस पर तो, मुझसे होकर गुजरे !!

नामुमकिन सा लगता है

मैं तो हमेशा चली हूं, तेरे पीछे, तेरी बेवफा परछाई की तरह,
किसी मोड़ पर, तेरा मेरे लिए रूक जाना, नामुमकिन सा लगता है।

आज भी कूद जाऊं, सतलुज, ब्यास, रावी, में सोहनी की तरह,
मगर, तेरा मुझे डूबने से बचाना, नामुमकिन सा लगता है।

तू कह तो सही, छोड़ दूँ सारा जहाँ, तेरी मोहब्बत की खातिर,
तेरा मुझे अपना बनाना, नामुमकिन सा लगता है।

तेरे हिज़र में, बह जाऊँ अपने ही आसुँओं में, सुरमें की तरह
तेरा मेरी मोहब्बत को पलको पर सजाना, नामुमकिन सा लगता है।

मैं तो कह दूँ सभी को, कि मुझे तुमसे मोहब्बत है
तेरे लिए मुझे भरी महफिल में बुलाना, नामुमकिन सा लगता है।

मैं फिर भी तुझे छोड़ दूँ तेरी खुशी के लिए.... जानम
तेरा मेरी वफाओं को भूल जाना भी, नामुमकिन सा लगता है।

मेरा इश्क ओहदे वस दा नहीं

कुछ वी कहो, एह इश्क मेरे वसदा नहीं....
ओहदियाँ अक्खा बोल दियां ने, कि प्यर है....
पर ओ, मूँहों कुछ दसदा नहीं.....

ओसने निभाया नहीं इक पल वी कदे साथ मेरा,
फिर भी, ओहदे बिना, दिल नू कोई जचदा नहीं.....

जीअ करदा ए.. हत्थ फड़के, चुम्म लवा मत्था उसदा,
छड़दो, ए वी तां मेरे वसदा नहीं.....

मेरे सपने, मेरे ख्याल, वट्टन घूरीयां मैंनू,
क्यों ओह ! समझदा, इशारा मेरी अक्ख दा नहीं...

हर रात, लोटदा है, मेरे सीने ते सप्प बनके,
क्यों मेरा इश्क, उसनू डसदा नहीं....

किन्ने सवाल, हिज़र, ते जिंदड़ी, कल्लम कल्ली,
आशिक तो बिना, सवाद, इश्क दे रस दा नहीं....

मैं पंख समेट के, सिमट जांदी आ, आपनियां ही बाहवा विच....
शायद मेरा इश्क वी, ओहदे वसदा नहीं......

सजना.....

रब सोने मेरे ने, मेरे सोहने मेल मिलाए....
ए तेरे नाम दी खैर आ, दित्ती मेरी झोलि पा सजना...

मैं चरखा कत्तां इश्के दा, तू मुहब्बतां दे तन्द पा सजना,
ए पूणिया इश्क दियां, मिलके लईये मुका सजना.....

धागा प्यार दा पाइऐ ते, तकला जान मेरी दा,
असी दोवां ने मिलके, लैणे इश्क दे गोले लाह सजना,

धागा साह दा पा पा के, असी रिश्ता लईये बना सजना
तू थक्क के सौं जावीं, मेरे पट्ट सरहाना लवीं बना सजना...
मैं पखीयाँ, झल-झलके, तैनू देवां ठण्डी हवा सजना

तेरा रूप है सोहना, उत्ते इश्के दा रंग चड़या...
मैं जावां तेरे सदके वे, करा रब दा शुक्रिया....

देके तेरे हत्थां विच हत्थ अपने, तेरा साहा नाल लवां
अपने साह मिला सजना....

तेरी आई मैं मरजां, तेरी हर लै लवां बला सजना....

वे जुग जुग जीवें,मेरे विआदड़िया.......तेरा झट ना करां वसाह सजना

आज का दिन बड़ा मुबारक

आज का दिन बड़ा मुबारक है, तुम्हें तोहफे में क्या चाहिए
तुम चाहो, दिल की धड़कन माँग लो....
तुम चाहो रगो की रवानी मांग लो...
तुम चाहो पलको का काज़ल मांग लो....
तुम चाहो आँखों का पानी मांग लो....
तुम चाहो मेरी सिर का आसमान मांग लो....
तुम चाहो पैरो की जमीन मांग लो....
तुम चाहो गर्म साँसे मांग लो.....
तुम चाहो सुर्ख होटो की नमी मांग लो.....
तुम चाहों मेरी प्यार की नज़र मांग लो.....
तुम चाहों मेरे ख्वाब ये हसीन मांग लो.....
तुम मेरे चेहरे की रौनक मांग लो......
तुम चाहों एहसास नाज़मीन मांग लो.....
आज का दिन तुम्हारा है.....
और तू मुझे जान से प्यारा हैं......

शेयर......

इन्हाँ उज़ड़े, सुनियाँ नैना विच,
असी इश्क दा सुरमा पा बैठे...... !
छड़ बैठे लहूँ दे रिश्ते वी,
अनजाना यार बना बैठे..... !
नहीं पता कि, किवें निभोणाँ ए,
इक रकीब नू हबीब बना बैठे..... !
घबरा गए, घुप्प (अँधेरे) हनेरे तो,
किसे होर नू हत्थ फड़ा बैठे..... !
डस गए महकदे हासे दिल नू,
असी ऐवे ई मुस्कुरा बैठे...... !
मुनासिब नइ सी उसदे घर जाना,
असी तड़प गे, ओदे-राह विच कुल्ली (झोपड़ी) पा बैठे..... !
मेरी रूह ने फेरली माला,, ओढ़े इश्क दी,
बेपरवाह यार नू खुदा बना बैठे..... !

क्या इरादा है......

तुम जो रखते हो हमसे दूरियां, दिन, हफ्ते दूर रह के
क्या तेरा दूर ही रहने का इरादा है.....

क्या तुमें फर्क नहीं पढ़ता मेरे उदास होने पर,
लगता है, मेरी आँखों से आसूं, जैसे बहाने का इरादा है....

कभी तो बन, तू मेरी सासों की माला का धागा,
या फिर मुझसे अलायदा रहने का इरादा है.....

मैं चलती हूँ तेरे पीछे, तेरे कदमों के निशान गिन के,
मेरा तो हर पल, तेरे साथ रहने का इरादा है....

दिल को सुकुन नहीं मिलता, तू जब रखता है फासले,
क्या तेरा अब, मुझसे अलविदा कहने का इरादा है.....

हम इश्क निभायेंगे तुमसे, तब भी,
जब मेरे चेहरे पे, झुरियों का कब्जा होगा....
अब तू ही बता, इश्क में सवरने का इरादा है, या बिछुड़ जाने का इरादा है......

अगर वो रुकने को कहता

इश्क की राह इतनी आसान ना थी.....
मैं इक कदम भी ना बढ़ाती, अगर वो रूकने को कहता

उसने कहा ही नहीं, मुझे छोड़के ना जा.....
मैं वो चौखट लांघ ही ना पाती, अगर वो रूकने को कहता

उसने कभी वादा नहीं किया, साथ निभाने का....
मैं अगले जन्म तक साथ निभाती, अगर वो रूकने को कहता

मेरी इज्जत मेरा गुरूर, तार-तार हो गया.....
इन रिश्तों के कमजोर धागों को... मैं तोड़ के ना जाती
अगर वो रुकने को कहता......

कभी जताया ही नहीं ,हक अपनी मोहब्बत का....
क्या तुम्हें भी मुझसे मोहब्बत है? काश मैं ये पूछ पाती
अगर वो रुकने को कहता.....

छोटी सी जगह नहीं थी उसके दिल के कोने में
मेरे लिए.....
मैं अपने लिए.... कोई आशियाना अलग ना बनाती....
अगर वो, अपने आशियाने में रुकने को कहता

वेख लै......

मेरीयां अक्खा विच आँसू बनके तैरदा ए....
इश्क तेरे दा नूर वेख लै.....

जे साडा चेहरा सोहना नहीं लगदा तैनूँ....
मन दीयां खोल अक्खा, साड़ी रुह वेख लै....

तू लै सकदा एँ,, तालाशी साडे दिल दी ,कुछ नहीं मिलना, तेरे अक्श तो बिना,
जे दिल करदा है तेरा, ता मिल सानूँ, ते आ, आके रूह-बरूह वेख लै....

तेरे चन्न जिहे, मुख तो सिवा, असी कुछ तकिया नहीं,
इन्हा नज़रा च, वसदां एँ, इक तू वेख लै.......

बुरा नहीं लगता

बहुत नखरे वाले हुआ करते थे हम कभी....
ये वक्त की मार है... अब बुरा नहीं लगता....

कह देते हैं लोग मुझे, एक की जगह चार बातें....
सुन लेती हूँ, चुपचाप, अब बुरा नहीं लगता....

हमें इश्क हुआ, तो लगा हम दोनों का हक है....
रह गया, बन के इक तरफा, अब बुरा नहीं लगता....

डर जाते थे हम, दिल टूटा कभी तो कयामत होगी....
अब तो, रूह तक टूटे है हम, अब बुरा नहीं लगता....

मनचला है, मेरे मन का महरम, देखता है हर दूसरा
चेहरा, हमे अब बुरा नहीं लगता....

उजड़े हैं मेरे दिलों की ख्वाहिशों के बगीचे,
किसी के साथ वो फूल सा मुस्कुराए, हमें बुरा नहीं लगता

ना समझ तो हूँ मैं, मगर समझ जाऊँगी इक दिन,
इश्क तो होता ही अधूरा है, किसी को पूरा नहीं मिलता ...

शुक्रिया, मेरे महरम, मेरे दिल तक आने का,
तेरा आकर चले, जाना, अब बुरा नहीं लगता

शेयर.....

बड़ी बेदर्दी से तोड़ दिए गए हम, इक काँच के पैमाने की तरह.....
भरी महफिल में अपना बनाना, और फिर नजरें चुराना,
उनकी इन आदतों से वाकिफ़ ना थे हम....

शेयर.....

तू नाम लेकर मेरा, बुला कभी हक से..... मुझे,
और मैं तुझे अनसुना कर दूँ....
तू गुस्सा कर, बता मेरी गलतियाँ...
मैं तेरी बात मानने से इन्कार कर दूँ....
तू कभी हाथ भी उठा, तेरी अना के लिए....
मैं रो कर तुमसे लिपट जाऊँ, तुझे भी रोने को मजबूर कर दूँ.... !!

कौन सा बहाना

जो हो रही है, गलतफहमियां......
इन्हें खत्म करना चाहोगे या बढ़ाना चाहोगे.....
मरना नहीं चाहिए था, अभी मासूम बहुत था इश्क मेरा......
तुम इसे दफनाना, चाहोगे या जलाना चाहोगे.....

मेरा तो क्या था, एहसास तेरा था, इश्क तेरा था
मैंने तो बस जिया है इसे कुछ दिन, याद रखना चाहोगे, या भुलाना चाहोगे......

तुम जब चाहते थे मुझे तो ठीक था, मैंने चाहा तो गुनाह हुआ,
इस गुनाह की माफ़ी देना चाहोगे या, कोई सजा सुनाना चाहोगे.....

तुमने खुद मार डाला, अपने एहसासों को,
तुम ही कहो अब कौन सा बहाना.... लगाना चाहोगे....

शेयर.....

ये इल्जाम सरासर बेबुनियाद है साहिब कि हमने उनसे इश्क किया.....
सारे का सारा कुसूर उनकी खूबसूरत नजरों का था.........

छोड़ दिया....

जुगनू की तरह ठण्डी रौशनी रखली तेरे लिए....
चिराग की तरह हमने जलना छोड़ दिया.....

मोहब्बत तो हमें, कल भी थी तुमसे आज भी है....
बस ! तेरी बाहों में शमा सा पिघलना छोड़ दिया...

मंजिल आज भी वहीं है, तेरी कसम, बस तेरी राह पर
हमने चलना छोड़ दिया....
खुदा सलामत रखे उसे, जिससे बंधी है तेरी किस्मत की डोरी,
हमने दुनियां से, मोहब्बत के नाम पर लड़ना छोड़ दिया....

फूल से महकते हैं हम, आज भी तेरे एहसास से
मगर खुशबू की तरह, हवा में बिखरना छोड़ दिया....

धुँए की तरह गुम हो जाते हैं, हम लोगों की नजरों से.....
गुमनामी ही रास आई हमें, तेरे बाद, किसी से मोहब्बत करना छोड़ दिया.....

क्या झूठी तस्सली देते हम, अपने ज़ख्मी दिल को...
ज़ख्म खुला ही रखा, इलाज भी करना छोड़ दिया......

शेयर.....

दिल में तुम्हारी तड़प रहने दो.....
आँखो में गहरी प्यास रहने दो....
हम जानते हैं, एक होगी नहीं हमारी मंजिल,
हमें अनजान रहने दो, इश्क को ख्वाब रहने दो....

शेयर.....

जब हमें तेरी तलब थी.... तुम ना थे....
जब हमें तेरी तड़प थी.... तुम ना थे......
जब चाहिए थी, हमें अपने ताज़ें ज़ख्मों पर तेरी मरहम सी नज़र.... तुम ना थे
कोई मर गया है मुझमें, तेरा इन्तजार करते-करते
आज तुम लौट भी आओ, तो हम, हम ना रहे.....

शेयर.......

गले तक भरे हुए हैं हम, उसके ठुकराने,
और, अपनी नाकाम मोहब्बत के आहों से,
काश ! कोई कहे, आ गले लग जा मेरे.....
और जीअ, भरके रोले…

शेयर.......

खन्जर उतार के, उसने मेरी रूह में बेवफाई का
बड़े अदब से पूछा,
दिले दर्द को, अब आराम तो है जिन्दगी...

शेयर.......

बड़ा गहरा सा रिश्ता रहा है उसके कदमों का मेरे दिले से....
उसका मेरी गली में, कदम रखना, और ये दिल तड़प उठना.....

शेयर.......

वो कब का भूल गया, मेरे इश्क, मेरी वफाओं को....
पता उसे, सिर्फ मेरे जिस्म की खुशबू का रहा.....

शेयर.....

गम ना कर, रखा होगा, कुछ तो
अपनी पोटली में, खुदा ने तेरे नाम का
तेरे हिस्से का, खुदा कुछ भी, किसी और को देगा नहीं....

शेयर.......

हमें दर्द-ए-दिल सकूँ होता, उसकी आवाज़ सुनकर,
मगर... उसने पूछा ही नहीं तुम कैसी हो मयूरी,

शेयर.......

वो खुश ना हुए, मेरे किरदार से कभी,
मैंने दिखाया उसे, अपनी जिन्दगी को तमाशा बनाकर भी...

कुछ खुराफाती ख्याल

मेरे जहन में कुलबुलाते हैं, कुछ खुराफाती ख्याल,
तुम कहो तो बयान कर दूँ.... ?

तेरी पलकों पर रख के लब अपने,
बेरंग सपनों में इश्क के रंग भर दूँ.... ?

लोग ढूँढते है मेरे चेहरे पर, मुस्कुराने की वजह,
ले के तेरा नाम तुझे बदनाम कर दूँ.... ?

मेरी गज़लों, नज़मों में ज़िक्र तुम्हारा ही है,
हुकम हो तो, शायरी का हर लफ्ज़ तेरे नाम कर दूँ.... ?

देखते तो होंगे, तुम भी मुझे सपनों में, सुबह की चाय के साथ तुझे नींद से जगाकर,
तुम पर एक एहसान कर दूँ.... ?

निकल जाते हो हमें नजरअंदाज करके,
गले में बाहें डालकर तेरे, तुझे परेशान कर दूँ.... ?

पेशगी इश्क की... क्या अदा करें तुम्हें हम,
अपना मासूम सा दिल तुझ पे कुरबान कर दूँ.... ?

मेरे जहन में कुलबुलाते हैं, कुछ खुराफाती ख्याल,
तुम कहो तो बयान कर दूँ.... ?

तुम ना आए....

मेरी मत पूछो, दिले हाल बुरा है,
तुझे तड़प-तड़प कर याद करें, याद करके तड़प जाएँ.....
मेरे दिल का ये हाल है, दिल-ए-महरम, पर तुम ना आए ॥

तुमने मुट्ठी मैं कैद कर रखी है, मेरी सांसों की डोरियां,
मौत तो आए, पर सास ना आए,
ये जो दर्द हिज्र का है, कोई तुझे कैसे बताए, तुम ना आए ॥

मैंने दीये को फिर बुझा दिया अपनी हथेली से,
जब दिल जले दिन-रात तो कोई दीया क्यों जलाएँ,
मैं रोशनी का अकेले क्या करती, जब तुम ना आए ॥

इन तरसती नज़रों ने, दिन-भर देखे तेरे मिलने के सपने
वो यो बिखरे टूटकर, कि सिमट ना पाए,
जब शाम ढली, सभी अपने घऱ आए.... बस तुम ना आए..... ॥

तलबगार तो नहीं

कौन हो तुम मेरे सपनो में, बिना इज़ाजत आने वाले ए शख्स,
कहीं तुम मेरी मोहब्बत के तलबगार तो नहीं.....

तेरी आँखों में दिखता है, जो मासूम सा,
कहीं वो मेरे लिए प्यार तो नहीं.....

बड़ा खर्चा होता है इश्क में, मोहब्बत के बाजार में,
कहीं तू एहसासों का खरीदार तो नहीं....

बड़ा इन्तजार है मुझे अपने दिल के महरम का ,
तू वही मेरा जानिसार तो नहीं ......

बड़ा महंगा पड़ता है, इश्क, तू फूँक-फूँक कर रखना कदम जमीं पर,
सोच लेना, कहीं तू हवा पे सवार तो नहीं.....

सजन मेरे—गीत

सजन मेरे रंगले, तेरे रंग विच मैं रंगी जावा-2
एहना अखीयां दा रंग किन्ना सोहना
हाए वे इन्हा अखीया दा रंग किन्ना सोहना..
आवे संग(शरम) जदों नजरां मिलावा.... सजन मेरे रंग ले, तेरे रंग विच मैं रंगी जावा

चिट्टे दन्द मोतिया दीआं लड़िया.....
तेरे हासिआ दे वारी-वारी जावा.... सजन मेरे रंगले, तेरे रंग विच मैं रंगी जावा

तेरा मुखड़ा वे लगे रब वरगा.....
किवे मुखड़े तो नजरा हटावा.... सजन मेरे रंगले, तेरे रंग विच मैं रंगी जावा

मैं प्यासी तेरी दीद,, दी,, वे चन्ना मैं प्यसी
वांग मछली दे तड़पी जावा.... सजन मेरे रंगले, तेरे रंग विच मैं रंगी जावा

वे आजा बनके परुहणा (महमान) मेरे घर दा....
तैनू कुट-कुट चूरीयां खवावाँ... सजन मेरे रंगले, तेरे रंग विच मैं रंगी जावा

मैं तां ओढ़िया दुप्पटा तेरे ना दा,, वे मैं ओढ़िया
दुपट्टा तेरे नां दा.... मर जावां जे मैं पल्ला सरकावा....
सजन मेरे रंगले, तेरे रंग विच मैं रंगी जावा

शेयर.......

बैठे रहेंगे इसी दुवारे पर,
जहां से मेरी, दिली मुरादें पूरी ना हुई....
बार-बार हम अपना खुदा, बदल लें....
हमारी भी तो ये आदत नहीं.....

गले तक भरे हुए हैं हम,
उसके दर्द, अपने आँसुओं से...
कोई कहे तो सही, आ गले लग जा...
और जी भर के रो ले.....

शेयर.......

इन्सानों से जब खुदा, खुश होते हैं तो.....
मोहब्बत की नेमतों से नवाज़ते हैं.....
और हम अपने खुदा के और करीब हो जाते हैं
जब मोहब्बत और इबादत में कोई फर्क ना रहे....
महबूब खुदा, और खुदा महबूब बन जाए....
मोहब्बत है... मोहब्बत है, मोहब्बत है....

शेयर

कैसे ना फूँक-फूँक कर, कदम रखे कोई
दिल की, सूनी गलीयों में....
जब मोहब्बत आती है, सब उजाड़ जाती है....
उड़ा ले गए, आशियाना, ये जो झोकें हवाओं के,
इश्क के नाम पर, और ना सताओ हमें.....
कि हम, कुछ ना कहेंगे, तिनका-तिनका हो जाएगे....

शेयर

मिल लिया करो हमें इतने से...
जितने तुम हमें, किस्मत से मिले हो....
खुदा ना करे... तेरे लिए दुआए-मांगते-मांगते
हम अपने खुदा से तुझे पूरा माँग बैठे.....

दूर रहो

दूर रहो इश्क की महकती गलियों से,
इस चकाचौंध में तुम, गुम हो जाओगे....

ये इश्क दुकानदारी, शहर के शहर उजड़े हैं दिलो के,
नफ़ा कम, नुकसान ज्यादा, तुम सह नहीं पाओगे....

बिकता है यहां प्यार भी, गलियों के नुक्कड़ पर,
तुम संजीदा महबूब कहां से लाओगे.....

मिलता है आराम, यहां खंजर की नोक पर,
तुम अपने मर्ज का इलाज-ए-सुकूं कहां पर पाओगे....

डूबती है इश्क की कश्तियाँ, साहिल पे आकर,तुम तो मझधार में उतरे हो,
तूफानी लहरों से कहां टकराओगे-चूर हो जाओगे....

निकले हो, इश्क की खरीददारी पर, ज़रा सम्भल के,
पछताओ अगर.. दिल की बातों में आओगे....
कुछ ना लगना है हाथ तेरे.... तुम खुद बिक जाओगे.....

शेयर

दिल का कहना है तुमसे,
हमसे कुछ तो राबता रखो.....
मिल जाए तेरी झलक, कि इन आँखों को सुकुन मिल जाए.....
बस इतनी तो इनायत रखो.....
तेरा नाम ले कोई तो पलटकर मैं देखूँ ...
इतना तो मुझपे अपना हक रखो....
मुमकिन है कि तुमसे निभेगी नहीं मोहब्बत
खुदाया, चाहत नहीं तो कम से कम कोई
रंजिश ही रखो.......

शेयर

परवाने से जलने का नशा पूछिए....
शमा से पिघलने का मज़ा पूछिए....
ना पूछिए कि इश्क करके हमने क्या पाया....
खुदा, खुद मिल गया, अब क्या ही रजा पूछिए....

शेयर

अभी मुझे कोई सवाल ना करो मैं दर्द में हूँ.....
सरे राह यूँ बवाल ना करो अभी मैं दर्द में हूं.....
वो किसका है, पूछो उसी को जाकर....
मेरा दिल बस उसका है ! मैं इसी नशे में हूं.....
वो भोला है, भा जाते हैं, उसे आते-जाते लोग भी....
मुझे इसके सिवा, कुछ दिखता नहीं... मैं इसी दर्द में हूँ.....
उसके एहसास, उसके ख्वाब मेरी नींद ले गए....
अब जगते हैं रातभर,, मैं इसी दर्द में हूं....
उसका हँसना मुस्कुराना, मेरे हर दर्द की दवा है....
अगर वो मेरा है तो फिर क्यों, मैं दर्द में हूँ....

शेयर

यकीनन उसे भी हमसे मोहब्बत तो थी मगर
हम दोनों के दरमियां.... इक कशमकश, रही.....
उसे मुझसे ज्यादा अपनी इज्जत की फिक्र थी...
और मुझे उसकी....

शेयर

उसकी पाकीज़ा नजर, जब मुझे देखती है....
उस नज़र से,
मैं सांवली सी उसकी नजर से निखर जाती हूँ....
उसने अनजाने में, मेरे चेहरे को कहा, चाँद सा....
मैं शरमाकर हर रात, चांदनी सी उसके चेहरे पर बिखर जाती हूं.....

तुम्हीं से सीखा है

किसी से दिल लगाना कोई बड़ी बात नहीं.....
किसी को शिद्दत से चाहना,, तुम्हीं से सीखा है

हम नादान, नासमझ, दुनिया की चालाकियों से बेखबर
मगर सीरत से नज़र आना,, तुम्हीं से सीखा है

मैं तो थी ही चिड़िया सी, गुनगुनाती शोर मचाती
सबकी सुनना, चुप रहना, अपने मन की करना, तुम्हीं से सीखा है

महकती हूँ मोहब्बत की खुशबू से तेरी मेहरबानियाँ हैं
और अपने इसी एहसास को सब से छुपाना,, तुम्हीं से सीखा है

शायद तड़पकर मर जाती, तुमसे ना मिलने के गम से,
सब्र रखना, और हर पल मुस्कुराना, तुम्हीं से सीखा है

मोहब्बत को लेकर, कोई अक्स तुम में दिखावे का नहीं,
मेरे लिए सब करना, चुपचाप रिश्ता निभाना, तुम्हीं से सीखा है

खूबसूरत इनायत, इश्क

तुम डरते रहे खुदा की खूबसूरत इनायत इश्क से
शायद !! तुमे इश्क पे यकीं करना ना आया....
हम तो बेबाक ही है, इजहार-ए-मोहब्बत करने में
हमें दुनियां की नज़रों से सम्भलना ना आया....
यो ही लड़खड़ाते रहे हम दोनो, इश्क की गलियों में
तुम्हें, कभी इज़हार करना ना आया.....
हमें तेरे इश्क से मुकरना ना आया.....

तुम्हें बताऊँ कैसे.....

तेरी मोहब्बत कैसी है मेरे लिए...
क्या कहूँ कोई लफ़्ज़ नहीं बचा है,, तुम्हें बताऊँ कैसे...?

नूर बरसता है, मुझपे तेरे इश्क का....
मैं जालिम दुनियां से इसे छुपाऊँ कैसे.... ?

तेरा दिल अगर कहे, तो खुशी से छोड़ देना मुझे...
तू तो हिस्सा है मेरा, तुझे खुद अलग कर पाऊँ कैसे... ?

ये तेरा ख्याल मुझे छोड़ता नहीं.....
अब मैं इसे अकेला छोड़ के जाऊं कैसे..... ?

पाल रही हूँ तेरे इश्क को नन्हें बच्चे की तरह
खुद रोयेगा, मुझे भी रुलाएगा, इसे सीने से हटाऊँ कैसे....?

इश्क को निभाने में लगती है दो जाने....
खुद चल रही हूं अंगारों पर मैं... दूसरी जान की राह बनाऊँ कैसे.... ?

तुम मुस्कुराना

तुम मुझसे खफ़ा ना होना, तेरे अच्छे के लिए
रोता हुआ, मैं अगर तुमको कल छोड़ दूँ....

बन जाऊँ खाक सी, तेरे हिजर की आग में जल के,
तेरे लिए खुशियाँ तमाम छोड़ दूँ.....

खुद छुप जाऊँ मैं गमों की काली रात ओढ़ कर
तुझपे सितारों का आसमान छोड़ दूँ.....

मैं लिख सकती अगर, सिर्फ तुझे अपनी किस्मत लिखती....
इश्क में जुदाई, हुक्म है खुदा का, इसे कैसे मोड़ दूँ....

तुम मुस्कुराते रहना, मेरी खुशी के लिए....
अगर रोता हुआ तुम्हें मैं कल छोड़ दूं....

नकली प्यार

गैर लुटदे ने, बनके हमदर्द अपने.....
बाहवा पाऊदे ने गले विच, ते गिरबान तक आजांदे

एह तां सगियाँ नूँ (अपनों को) सक्क वागु छिल छड़दे....
ते साडियां जड़ा तक हिला जांदें....

फुल्ला वागरा तोड़ के सिट छड़ दे.....
ऐही प्यार सी उन्हा दा जिता जांदें....

कदी रखदे.... पैरां दी जुत्ती वांग झाड़के....
कदी ठोकरां च, उच्चा उछाल जांदें....

कदें नैनां विच रखदे ,वाग सुरमें दे....
ते कदे नज़रा चुरा के, जिन्दगी गाल जांदे.....

महकदे ने साहा विच, महकां बनके....
कदे जिऊणा ही कर दुशवार जांदें....

कदे रब बन के सानु बकशन खुशियाँ.....
कदे गल ते कटार (चाकू) चला जादें

अपना कौन ते पराया कौण... एही सोचदे.....असी
फस अधविचकार जादें....

तलियां ते चोग चुगाके, लाड़ लड़ाके...
अपने ही हत्थी, मार-मुका जादें....

दिल नहीं करता

क्या कहें, कि तेरा हिज्र भी हमें इश्क से कम नहीं लगता
बस ! दिल थोड़ा उदास है, इसे समझाने का अब दिल नहीं करता....

डूबा रहता है तेरे ख्यालों में, किसी और ख्याल का दिल नहीं करता....
हम हँसते-खेलते हैं, कि लोगों की नज़रें हैं मुझ पर
सच पूछो तो, मुस्कुराने को भी दिल नहीं करता...

इक तरफ दिल कहता है, मैं मांग लू हिसाब तुमसे
अपनी वफाओं का... तुमने तो कभी कुछ कहा ही नहीं...
फिर से दिल तुड़वाने को दिल नहीं करता....

हम समझे ही नहीं क्यों टूटकर बिखरे हम.....
ये सज़ा हमें क्यों मिली.....
नए सिरे से अब खुद को बनाने का दिल नहीं करता...

ये सच है, हमें इश्क का शौक बहुत था.....
मेरा इश्क तुम हो, ये बात याद करने का दिल नहीं करता....

मेरी ख्वाहिशें, चाहतें, सब तेरे नाम पर दर्ज रहेंगी हमेशा....
किसी और के काम कर जाने का दिल नहीं करता....

कितना बेचैन थे हम, कि तुम बुला लोगे हमें.....
तुमे परवाह ही नहीं.....
अब वापिस लौट आने का दिल नहीं करता....

शेयर

हम चाहकर भी उनको भुला ना पाए.....
वो चाहकर भी हमें अपना ना पाए...
इक डोरी महीन सी रही,
हम दोनो के दरमियां....
वो चाह कर भी खुद को छुड़ा ना पाए....
हम चाह कर भी खुद को छुड़ा ना पाए.....

शेयर

तेरी बाहों में छुप जाने को जी करता हैं,
तेरी आँखों में रहकर,
सवंर जाने को जी करता है....

मैं क्यों किसी से पूछूँ, कि तुम किसकी अमानत हो
तुम्हें तो बस ! अपना बनाने को जी करता हैं..... !

मोहब्बत निभाऊँ कैसे

मेरा दिल जो रूठा बैठा है तेरी वजह से,
तुम ही कहो इसे मनाऊँ कैसे....

तुमसे कर तो बैठे है, इज़हारे मोहब्बत इकतरफा,
इकतरफा मोहब्बत को निभाऊँ कैसे.....

तुम कुछ ना भी कहो फिर भी ये सुनता है तुमी को,
ये तेरा हो चुका है, जाने कब से, तुम ही कहो, इसे अपना बनाऊँ कैसे...

मैं तो चल रही हूँ गुमनाम मन्जिल, अन्जाने सफर पर,
इसकी तो मंजिल ही तुम हो, इसे इसकी मंजिल तक पहुँचाऊं कैसे...

अब तो ना हिम्मत है, अपने सपनों की खातिर, शहर भर से लड़ने की,
बुझी सी आँखों में, उम्मीद का चिराग जलाऊँ कैसे....

काश ! तुम आ जाते, गुनगुनी धूप से, मेरे सरद एहसासों को,
कुछ राहत मिल जाती ,पर इस अँधेरे दिल में लौ जलाऊँ कैसे....

डसती है तेरी बेकदरी, कहीं मर ना जाए इश्क मेरा,
इश्क तुमने पढ़ाया मुझे, अब तेरी शिकायत तुम्हीं से लगाऊं कैसे....

इश्क से मुकरो तो मुकर जाओ शौक से, मेरा दिल वापिस करोगे कैसे,
जो अभी भी तेरे पास है, और मैं इसे अपने पास बुलाऊँ कैसे....

बाकी है.......

मैं तो अन्दर तक टूटी हूँ, तेरे इश्क में....
हाथ हटा लो अगर, गिर के चूर होना बाकी है....

टूटा वो आशियाना, जो काँच का बनाया था...
रुका है, जिस उम्मीद के सहारे, बस वही टूटनी बाकी है...

चुपचाप लौट जाऊंगी तेरी इन गलियों से,
बस तुझे चैन से सोता देखना बाकी है....

दबे पांव गुजर जाऊंगी, तेरे करीब से...
ये घुँघरूओं वाली पाजेब खोलना बाकी है...

क्यों उड़ गए इश्क के परिंदे मेरे हाथों से....
शायद !! पता इनको भी था, वक्त-ए-इश्क किसके पास बाकी है.....

क्यों रहें फासले तेरे मेरे दरमियां ये मैंने अब जाना....
इसी बात पर लिख दी किताब, बस !! एक पन्ना बाकी है